खंड 5
बीपीसीसी 110 प्रायोगिक घटक

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

खंड 5 बीपीसीसी110 का प्रायोगिक घटकः अनुप्रयुक्त सामाजिक मनोविज्ञान*

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, वर्तमान पाठ्यक्रम में 2 क्रेडिट का अनिवार्य प्रायोगिक घटक है। यह खंड प्रायोगिक और इससे संबंधित पहलुओं के विषय में चर्चा करता है।

संरचना

1.0 उद्देश्य

2.0 प्रस्तावना

3.0 प्रयोग 1ः मनोवैज्ञानिक परीक्षण

4.0 प्रयोग 2ः गहन साक्षात्कार विधि

5.0 प्रयोग 3ः नियोजित व्यवहार के सिद्धांत के आधार पर हस्तक्षेप तैयार करना

6.0 प्रायोगिक नोटबुक के लिए प्रारूप

7.0 मूल्यांकन

8.0 संदर्भ

9.0 अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

10.0 परिशिष्ट

1.0 उद्देश्य

इस खंड को पढ़ने के बाद, आप सक्षम होंगे,

- एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण के प्रबंधन में;
- आँकड़ा संग्रह की साक्षात्कार विधि, साक्षात्कार करने की प्रक्रिया, साक्षात्कार अनुसूची तैयार करने और विषयगत विश्लेषण करने पर चर्चा करने में; तथा
- नियोजित व्यवहार के सिद्धांत के आधार पर एक हस्तक्षेप के डिजाइन पर चर्चा करने में।

2.0 परिचय

वर्तमान पाठ्यक्रम 6 क्रेडिट का है। 4 क्रेडिट थ्योरी के लिए और 2 क्रेडिट प्रायोगिक के लिए दिए गए हैं।

पिछले खंडों में, हमने अनुप्रयुक्त सामाजिक मनोविज्ञान के विषय क्षेत्र के विषय में सीखा है। हमने अनुप्रयुक्त सामाजिक मनोविज्ञान के लिए प्रासंगिक पद्धतिगत दृष्टिकोणों पर भी ध्यान केंद्रित किया जिसमें मात्रात्मक और गुणात्मक शोध दोनों सम्मिलित थे। साथ ही विभिन्न सामाजिक मुद्दों और समस्याओं पर प्रकाश डालने का भी प्रयास किया गया। बाद के खंडों में, हमने विशेष रूप से पर्यावरण और विविधता,

*प्रो. सुहास शेटगोवेकर, मनोविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

उपभोक्ता व्यवहार, कार्य परिवेश, शिक्षा और कक्षा में स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और कल्याणआदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में सामाजिक मनोविज्ञान के अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित किया।

प्रायोगिक एक घटक के रूप में आपके पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है ताकि आपको उन विषयों के विषय में कुछ व्यावहारिक जानकारी मिल सके जो आपने थ्योरी में सीखे हैं। पिछले पाठ्यक्रमों में आपके द्वारा किए गए प्रायोगिक मुख्यतः प्रयोगशाला आधारित थे। हालाँकि, वर्तमान पाठ्यक्रम में हम जो व्यावहारिक अध्ययन करेंगे, वह पूरी तरह से प्रयोगशाला आधारित नहीं है। इस पाठ्यक्रम की अनुप्रयुक्त प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, प्रयोग का ध्यान पिछले खंडों में सीखी गई बातों को लागू करने पर होगा।

प्रत्येक शिक्षार्थी को तीन प्रयोगों में से दो प्रयोग करने होते हैं।

तीन प्रयोग(प्रैक्टिकल) हैं जिनका उल्लेख इस प्रकार हैः

प्रयोग1ः मनोवैज्ञानिक परीक्षण

प्रयोग2ः साक्षात्कार विधि

प्रयोग3ः नियोजित व्यवहार के सिद्धांत के आधार पर एक हस्तक्षेप तैयार करना

तीन प्रयोगों में से, प्रयोग1 अनिवार्य है और अकादमिक परामर्शदाता प्रयोग2 और 3 में से किसी एक प्रयोग को चुन सकता/सकती है जिसे शिक्षार्थी पूरा करेंगे।

प्रायोगिक सत्रः इस पाठ्यक्रम के दो क्रेडिट है, प्रायोगिक घटक के लिए तीन घंटों के दो सत्र होंगे।

3.0 प्रयोग 1ः मनोवैज्ञानिक परीक्षण

यह एक **अनिवार्य प्रयोग** है और जो मनोवैज्ञानिक परीक्षण आयोजित की जानी है उसका चयन काउंसलर द्वारा किया जाएगा।

आपने बीपीसीसी105 के तहत मनोवैज्ञानिक परीक्षण का अध्ययन किया होगा। लेकिन सीखने के अनुभव के लिए, वर्तमान खंड में मनोवैज्ञानिक परीक्षण पर विस्तार से चर्चा की गई है।

इस प्रयोगको करने की प्रक्रिया के अलावा, प्रायोगिक नोटबुक में रिपोर्ट लिखने का प्रारूप भी इस खंड में सम्मिलित किया जाएगा।

आइए अब हम मनोवैज्ञानिक परीक्षण और उसके पहलुओं के विषय में चर्चा करें।

मनोवैज्ञानिक परीक्षण मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के प्रशासन का गठन करता है। यहां, यह समझना महत्वपूर्ण है कि मनोवैज्ञानिक परीक्षण क्या हैं। मनोवैज्ञानिक परीक्षणों को ऐसे उपकरण के रूप में वर्णित किया जा सकता है जिनका उपयोग मनोवैज्ञानिक इकाइयों जैसे बुद्धि, व्यक्तित्व, अभिवृत्ति, अभिरुचि, उपलब्धि अभिप्रेरणा इत्यादि को मापने के लिए किया जा सकता है। आइए हम मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की कुछ परिभाषाओं पर ध्यान दें।

मनोवैज्ञानिक परीक्षण को ग्रेगरी (2010, पृष्ठ 16) ने "व्यवहार के प्रतिचयन और श्रेणियों या अंकों की सहायता से इसका वर्णन करने की एक मानकीकृत प्रक्रिया" के रूप में परिभाषित किया है।

मनोवैज्ञानिक परीक्षण को व्यवहार के उस नमूने के माप के रूप में वर्णित किया जा सकता है जो मानकीकृत और वस्तुनिष्ठ है (अनास्तासी , 1969)।

कपलान एवं सैकुजू (2013) ने मनोवैज्ञानिक परीक्षणों को एक उपकरण या तकनीक के रूप में समझाया जिसे व्यवहार के मापन के लिए उपयोग किया जाता है और जो न केवल व्यवहार को समझने में मदद करता है बल्कि इसका पूर्वानुमान भी लगाता है।

कोहेन– स्वर्डलिक (2010, पृष्ठ 2) ने मनोवैज्ञानिक परीक्षणों को " व्यवहार के नमूने को प्राप्त करने के लिए अभिकल्पित उपकरणों या प्रक्रियाओं द्वारा मनोविज्ञान से संबंधित चर को मापने की प्रक्रिया " के रूप में परिभाषित किया है।

मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के कुछ मुख्य गुण ऊपर चर्चा की गई परिभाषाओं से स्पष्ट हैं। इन गुणों पर यदि प्रकाश डाला जाए, तो मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की प्रकृति मुख्य रूप से वस्तुनिष्ठ है। उनकी पूर्वानुमानित और नैदानिक मूल्यता भी है। एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण मानकीकृत भी है, जिसका अर्थ है कि परीक्षण का संचालन और स्कोर करते समय अनुसरण की गई प्रक्रिया समान है। इस तरह के निर्देश और स्कोरिंग परीक्षण के मैनुअल में प्रदान किए गए हैं। इसके अलावा मैनुअल उन मानदंडों के विषय में भी जानकारी प्रदान करेगा जिस के आधार पर एक व्यक्ति के स्कोर को समझा जा सकता है। कोई भी मनोवैज्ञानिक परीक्षण कुछ मनोवैज्ञानिक इकाई या चर से संबंधित व्यवहार का एक नमूना मापता है। और यद्यपि गति परीक्षण भी होते हैं, पर अक्सर मनोवैज्ञानिक परीक्षण शक्ति परीक्षण होते हैं, अर्थात् आइटमस का कठिनाई स्तर धीरे–धीरे बढ़ता चला जाता है। इस प्रकार विभिन्न व्यक्तियों, उच्च क्षमता रखने वालों के साथ–साथ कम सामर्थ्य/क्षमता रखने वालों, के सामर्थ्य/क्षमता की पहचान करना संभव है। यह एक व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक चर से संबंधित गुणवत्ता की सीमा को दर्शाता है। एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण को मान्य और विश्वसनीय भी होना चाहिए, इसका लाभ मैनुअल में उन्हें स्थापित करने के लिए उपयोग की जाने वाली विधि के विवरण के साथ बताया गया है (इन पर इस इकाई के बाद के वर्गों में विस्तार से चर्चा की जाएगी)।

कुछ धारणाएँ हैं जिन पर प्रकाश डालने की आवश्यकता है, वे इस प्रकार हैंः

1. एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण को वैध होने की आवश्यकता है या इसे उसी अवधारणा का मापन करना चाहिए जिसके लिए इसे बनाया गया है।
2. यह विश्वसनीय या सुसंगत होना चाहिए।
3. यह वस्तुनिष्ठ होना चाहिए और यह माना जाता है कि परीक्षण लेने वाले व्यक्ति , समान रूप से परीक्षण वस्तुओं को समझते हैं।
4. यह माना जाता है कि परीक्षण लेने वाले व्यक्ति जवाब देंगे कि परीक्षण उस संबंध में उनकी भावना को सही ढंग से व्यक्त करने में सक्षम होगा।
5. यह माना जाता है कि व्यक्ति ईमानदारी से वस्तुओं का जवाब देंगे। हालांकि व्यक्ति द्वारा सामाजिक वांछनीयता के कारण उत्तर देने की हमेशा एक संभावना होती है।
6. प्रपैमाने (पूर्वाग्रह, अपेक्षाएँ), परीक्षार्थी (चिंता, थकान) के साथ–साथ परीक्षण की स्थिति (तापमान, विकर्षण) के कारण त्रुटि विचलन का होना माना जाता है ।

मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का एक विशाल दायरा और अनुप्रयोग होता है क्योंकि इसका उपयोग नैदानिक, परामर्श, औद्योगिक और संगठनात्मक से लेकर फोरेंसिक सेट अप तक विभिन्न सेट अप में किया जाता है। नैदानिक सेट अप में इसका उपयोग मनोवैज्ञानिक विकारों के निदान के लिए किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, बेक की अवसाद सूची, अवसाद की नैदानिक प्रक्रिया में सहायक हो सकती है। परामर्श की

स्थिति में, इसका प्रयोग कैरियर निर्णय लेने के लिए और किसी की अभिक्षमता और अभिरुचि को समझने के लिए किया जा सकता है। डिफरेंशियल एप्टीट्यूड टेस्ट, करियर प्रेफरेंस रिकॉर्ड और वोकेशनल इंटरेस्ट इन्वेंट्री जैसे परीक्षण इस संदर्भ में उपयोग किए जा सकते हैं। मनोवैज्ञानिक परीक्षण का उपयोग औद्योगिक और संगठनात्मक रूप से चयन के उद्देश्य से भी किया जा सकता है और साथ ही कर्मचारियों में तनाव संबंधों के मुद्दों आदि को समझने के लिए भी किया जा सकता है। जॉब स्ट्रेस स्केल, ऑर्गेनाइजेशन सिटीजनशिप बिहेवियर, जॉब सैटिस्फैक्शन स्केल आदि को इस सेटअप में इस्तेमाल किया जा सकता है। फोरेंसिक मनोविज्ञान के साथ–साथ मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का उपयोग व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक स्थिति को समझने के लिए किया जा सकता है। इस प्रकार मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का उपयोग विभिन्न प्रकार की मनोवैज्ञानिक इकाइयों को मापने के लिए किया जा सकता है, जिनमें बुद्धि, व्यक्तित्व, रचनात्मकता, रुचि, योग्यता, अभिवृत्ति मूल्य इत्यादि सम्मिलित हैं। यहां तक कि ऐसे मनोवैज्ञानिक परीक्षण भी हैं जो इंटरनेट की लत, अनुकूलनता, मानसिक स्वास्थ्य, मनोवैज्ञानिक भलाई, कथित अभिभावक व्यवहार, पारिवारिक वातावरण आदि जैसे चरों का मापन करते हैं।

एक अच्छे मनोवैज्ञानिक परीक्षण के लक्षण

जैसा कि हमने अब एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण के विषय में एक विचार विकसित किया है, आइए हम एक अच्छे मनोवैज्ञानिक परीक्षण की विभिन्न विशेषताओं पर चर्चा करें। ये एक तरह से पहले खंड में चर्चा की गई अवधारणाओं से संबंधित हो सकते हैं। एक अच्छे मनोवैज्ञानिक परीक्षण की कुछ विशेषताओं की चर्चा इस प्रकार हैः

1. **मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्रकृति में वस्तुनिष्ठ हैं**ः किसी भी अच्छे मनोवैज्ञानिक परीक्षण को वस्तुनिष्ठ होना चाहिए न कि व्यक्तिपरक। किसी भी तरह के पूर्वाग्रह के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए। एक वस्तुनिष्ठ मनोवैज्ञानिक परीक्षण यह भी दर्शाता है कि यह वैध और विश्वसनीय है।

2. **मनोवैज्ञानिक परीक्षण की वैधता**ः एक अच्छे मनोवैज्ञानिक परीक्षण की जो अगली विशेषता होनी चाहिए वह है वैधता। वैधता को परीक्षण की क्षमता के रूप में समझाया जा सकता है कि इसे क्या मापना चाहिए। वजन को मापने के लिए एक तौल मशीन एक वैध उपकरण है और यह लंबाई को मापने के लिए मान्य नहीं है।

3. **मनोवैज्ञानिक परीक्षण की विश्वसनीयता**ः एक अच्छा मनोवैज्ञानिक परीक्षण विश्वसनीय या सुसंगत भी होगा। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी निश्चित दिन एक पैमाने से एक मेज़ की लंबाई मापते हैं और यदि आप छह महीने के बाद उसी पैमाने के साथ उसी मेज़ की लंबाई का मापन करें, तो सेंटीमीटर में प्राप्त लंबाई समान रहेगी, इस प्रकार यह संकेत है कि यह पैमाना विश्वसनीय है।

   हालांकि, वैधता और विश्वसनीयता के संदर्भ में, यह याद रखना चाहिए कि मनोविज्ञान में हम जिन इकाइयों का मापन करते हैं वह बुद्धि और व्यक्तित्व जैसी अमूर्त इकाइयां हैं। और इस प्रकार मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के लिए वैधता और विश्वसनीयता स्थापित करना एक कठोर प्रक्रिया है।

4. **एक अच्छे मनोवैज्ञानिक परीक्षणों में विभेदक विशेषता होगी**ः परीक्षण किसी दिए गए पहलू या चर पर एक व्यक्ति से दूसरे के बीच किसी भी अंतर को निरूपित करने में सक्षम होना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि दो व्यक्ति अपनी संगीत योग्यता में भिन्न हैं, तो परीक्षण इस योग्यता पर दोनों के बीच अंतर करने के लिए सक्षम होना चाहिए।

5. **एक अच्छा परीक्षण व्यापक होगा**ः यह दर्शाता है कि परीक्षण उस अवधारणा के सभी आयामों या पहलुओं को मापता है जिसका उसे मापन करना है।

इस प्रकार मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का संरचनात्मक अत्यंत सावधानी के साथ किया जाना चाहिए और सभी आवश्यक प्रक्रियाओं का पालन किया जाना चाहिए। परीक्षण की वस्तुओं के संरचनात्मक के समय विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है, और उन्हें स्पष्ट होने और अनेकार्थी ना होने की आवश्यकता होती है। एक अच्छा परीक्षण मात्रात्मक भी होना चाहिए और वस्तुओं को स्कोर करना संभव होना चाहिए।

वैधता और विश्वसनीयता

एक अच्छे मनोवैज्ञानिक परीक्षण की विशेषता के तहत हमने संक्षेप में विश्वसनीयता और वैधता के विषय में चर्चा की। हमने वजन तोलने की मशीन और एक पैमाने का एक उदाहरण इस्तेमाल किया। किसी उपकरण की वैधता और विश्वसनीयता को स्थापित करना तुलनात्मक रूप से आसान है क्योंकि वे जिन इकाइयों को भी मापते हैं, वे मूर्त हैं। दूसरी ओर, मनोविज्ञान में जिन इकाइयों का अध्ययन किया जाता है वे अमूर्त हैं, जैसे बुद्धि, व्यक्तित्व, अभिवृत्ति इत्यादि। आगे चलकर इंसान बदल भी सकता है और उसके व्यवहार में बदलाव आ सकता है। इस प्रकार, उनकी वैधता और विश्वसनीयता स्थापित करना मुश्किल है।

इस इकाई के वर्तमान खंड में हम वैधता और विश्वसनीयता पर चर्चा करेंगे, जो किसी भी मनोवैज्ञानिक परीक्षण के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं।

आइए पहले हम वैधता पर चर्चा शुरू करें। जब तक कि परीक्षण की वैधता स्थापित नहीं किया जाता, तब तक इसकी विश्वसनीयता का आँकलन सार्थक नहीं होगा।

वैधताः वैधता को एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण की विशेषताओं के रूप में वर्णित किया जा सकता है, जिसमें कहा गया है कि क्या परीक्षण मापता है कि वही मापता है जिसका इसे मापन करना है या जिसके मापन के लिए यह बना है। इस प्रकार समायोजन पर परीक्षण को समायोजन को मापने की जरूरत है और आत्मसम्मान पर एक परीक्षण को आत्मसम्मान को मापने की जरूरत है। एक पैमाना, जो लंबाई को मापता है, वजन को मापने के लिए एक वैध साधन नहीं है और लंबाई को मापने के लिए एक तौल मशीन एक वैध साधन नहीं है। इसी तरह, एक अच्छे मनोवैज्ञानिक परीक्षण को मान्य होना चाहिए और उस इकाई (या व्यवहार के नमूने) को मापना चाहिए जिसे मापने के लिए इसे विकसित किया गया था।

वैधता की विभिन्न विधियां हैं, इनकी चर्चा इस प्रकार हैः

आभासी वैधता (फेस वैलिडिटी)ः जैसा कि नाम से पता चलता है कि यहां परीक्षण के अंकित मूल्य पर ध्यान केंद्रित किया गया है। यदि परीक्षण जिस इकाई का मापन करने के लिए बना है, उसका मापन करता हुआ प्रतीत हो तो इसे आभासी वैधता कहते हैं। यह मूल रूप से निर्णायकता पर आधारित है (वीराराघवन और शेटगोवेकर, 2016)। इस तरह की वैधता यह तय करने में सहायक हो सकती है कि परीक्षण में सम्मिलित आइटम कुछ विशिष्ट स्थितियों में उपयुक्त हैं या नहीं।हालांकि यह परीक्षण की वैधता के विषय में निष्कर्ष निकालने के बजाय आइटम के परीक्षण की प्रक्रिया में प्रारंभिक कदम माना जा सकता है।

विषयवस्तुपरक वैधता (कंटेंट वैलिडिटी)ः यह वैधता मनोवैज्ञानिक परीक्षण की विषयवस्तु पर केंद्रित है। व्यवहार की अभिव्यक्तियों के साथ परीक्षण में सम्मिलित वस्तुओं की तुलना करके विषयवस्तु की वैधता स्थापित की जाती है । मुख्य रूप से, विषयवस्तुपरक वैधता में, क्या जिस विषय वस्तु का मापन परीक्षण द्वारा किया जाना है परीक्षण उसे दर्शाता है या नहीं इस पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। विषयवस्तुपरक वैधता को आभासी वैधता से अलग किया जा सकता है क्योंकि पूर्व वैधता में उन वस्तुओं, जो प्रकृति में व्यापक हैं, की परीक्षा सम्मिलित है। इसके अलावा, मात्रात्मक

डेटा (आँकड़ों) का भी उपयोग किया जाता है। आइटम और कुल स्कोर के बीच सहसंबंध की गणना की जाती है जो परीक्षण की विषयवस्तु की वैधता के विषय में एक विचार प्रदान करता है। इस प्रकार, इस बारे में एक स्पष्ट विचार कि प्रत्येक वस्तु मनोवैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा मापित चर का प्रतिनिधित्व कैसे करती है। विषयवस्तुपरक वैधता प्राप्त करने के लिए, दोनों आइटमस, जो मनोवैज्ञानिक परीक्षण द्वारा मापन किए जाने वाले चर से संबंधित हैं और जो आइटम परीक्षण के चर से संबंधित नहीं हैं, को सम्मिलित करने की आवश्यकता है। एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण को परीक्षण संरचनात्मक चरण के दौरान पहले विषयवस्तुपरक वैधता के लिए मापा जा सकता है।

संरचनात्मक वैधता (कंस्ट्रक्ट वैलिडिटी): जैसा कि पहली इकाई में चर्चा की गई थी, एक संरचना को एक अवधारणा कहा जा सकता है जिसे प्रायोगिक उद्देश्य से चुना जाता है (केर्लिंगर , 1995)। इसलिए, जब एक शोध में प्रायोगिक उद्देश्य के लिए समायोजन या रचनात्मकता को अपनाया जाता है, तो इसे एक अवधारणा कहा जाएगा। संरचनात्मक वैधता में सबूतों की तलाश सम्मिलित है कि परीक्षण द्वारा कुछ हद तक परिलक्षित व्यवहार अवधारणा को इंगित करता है। इस वैधता में, संरचना से संबंधित सिद्धांत के आधार पर परिकल्पना तैयार की जाती है और फिर डेटा संग्रह के आधार पर परिकल्पना को स्वीकार या अस्वीकार करने का प्रयास किया जाता है। डेटा के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि प्राप्त परिणामों को सिद्धांत के द्वारा समझाया गया है या नहीं। यदि नहीं तो सिद्धांत को संशोधित किया जाता है और प्रक्रिया को दोहराया जाता है।

मानदंड संबंधित वैधता (क्राइटेरियन रिलेटेड वैलिडिटी): यह मनोवैज्ञानिक परीक्षण की पूर्वानुमान की विशेषता से संबंधित है और प्रकृति में वैज्ञानिक है (वीराराघवन और शेटगोवेकर , 2016)। यह उस सीमा के रूप में समझाया जा सकता है जहां तक एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण का उसी चर को मापने वाले एक वैध मनोवैज्ञानिक परीक्षण या अन्य स्वर्ण मानक मूल्यांकन रणनीतियों के अनुसार सह–प्रसरण हो जाता है (हेन्स एवं अन्य, 1999) । स्वर्ण मानक मूल्यांकन रणनीति कुछ और नहीं बल्कि एक अलग और सटीक मानदंड या व्यवहार मूल्यांकन है जिसे विशेषज्ञों द्वारा मान्य मनोवैज्ञानिक परीक्षणों, अवलोकन और साक्षात्कार का उपयोग करके किया जाता है (ज़ोलोटर और मेयर, 2004; रिच आईबर्ग , 2001)।

मानदंड की वैधता में निम्नलिखित तीन श्रेणियां सम्मिलित हैं:

विभेदी वैधता (डिस्क्रिमिनेटिव वैलिडिटी): यह इस आधार पर निर्धारित किया जा सकता है कि क्या परीक्षण उन समूहों, जो अनुबंधित हैं, में व्यक्तियों को वर्गीकृत करने में सक्षम है, उस इकाई के आधार पर जिसे यह मापता है। इस प्रकार की वैधता तब प्रासंगिक है जब हमें एक स्पष्ट निर्णय लेने की आवश्यकता होती है जो कि श्रेणीबद्ध है, उदाहरण के लिए, क्या वह व्यक्ति कुसमायोजन प्रदर्शित करता है या नहीं। हालांकि इस तरह की वैधता प्रासंगिक नहीं हो सकती है जब विकसित परीक्षण एक निरंतर पैमाने है और एक लंबे समय की अवधि के दौरान समायोजन का मापन करता है, जैसे कहा जाए तो परामर्श प्रक्रिया के दौरान।

समवर्ती वैधता (कनकरंट वैलिडिटी): मनोविज्ञान में, ऐसे कई परीक्षण हो सकते हैं जिनका निर्माण असमान या समान इकाइयों को मापने के लिए किया गया है। समवर्ती वैधता में, एक परीक्षण की वैधता उसके स्कोर की तुलना एक अन्य वैध परीक्षण, जो कि असमान या समान इकाई को मापता है, के साथ कर स्थापित की जाती है। यह एक ही समय में व्यक्तियों के एक ही समूह पर दो परीक्षणों को लागू करके किया जा सकता है। विकसित परीक्षण की वैधता को इस आधार पर निर्धारित किया जाता है कि क्या इसका समान इकाई का मापन करने वाले अन्य अवैध परीक्षणों के साथ महत्वपूर्ण से संबंध है या किसी दूसरी इकाई का मापन करने वाले वैद्य परीक्षणों के साथ इसका कोई महत्वपूर्ण सहसंबंध नहीं है।

अभिसरण वैधता (कन्वर्जेंट वैलिडिटी): यह वैधता उस हद का मापन करती है जहां तक कि दो परीक्षण जो समान या समरूप इकाई को मापते हैं, आपस में व्याप्त हैं। इस प्रकार, एक सहसंबंध दो परीक्षणों के बीच स्थापित होता है जो समान या समान इकाई को मापते हैं और यदि महत्वपूर्ण सहसंबंध है तो हम अब यह कह सकते हैं कि विकसित परीक्षण वैध है। उदाहरण के लिए, व्यावसायिक तनाव को मापने के लिए विकसित एक परीक्षण का एक अन्य वैध परीक्षण, जो व्यावसायिक तनाव को ही मापता है, के साथ महत्वपूर्ण सहसंबंध है ।

विवक्तकर वैधता (डिस्क्रिमिनेंट वैलिडिटी): इसे अपसरण वैधता के रूप में भी जाना जाता है। इस वैधता में, एक परीक्षण को उन परीक्षणों से अलग करने प्रयास किया जाता है जो उस इकाई को मापते हैं जिसे मापने के लिए परीक्षण विकसित नहीं किया गया है। इस प्रकार, विकसित परीक्षण करने को इस तरह के परीक्षण के साथ कोई संबंध नहीं दिखाना चाहिए। इस प्रकार, विकसित परीक्षण और एक अलग इकाई को मापने वाले परीक्षण के बीच कोई सहसंबंध नहीं होगा। उदाहरण के लिए, व्यावसायिक तनाव और नौकरी की चिंता के बीच कोई सहसंबंध नहीं होगा। इस तरह की वैधता की मदद से , हम यह जान सकते हैं कि विकसित किया गया परीक्षण उसी इकाई को मापता है, जिसके लिए इसे विकसित किया गया है और किसी अन्य असंबंधित इकाई या एक इकाई जो परीक्षण द्वारा मापे जाने वाली इकाई का अभिसरण कर सकती है, को नहीं मापता है।

पूर्वकथनात्मक वैधता (प्रिडिक्टिव वैलिडिटी): इस वैधता को एक निश्चित समय में विकसित मनोवैज्ञानिक परीक्षण पर प्रदर्शन और किसी अन्य समय (कसडीन , 1998) के मानदंड माप पर प्रदर्शन के बीच संबंध के रूप में समझाया जा सकता है । यह वैधता दो अलग–अलग परीक्षणों से प्राप्त अंकों के बीच सहसंबंध की मदद से स्थापित की जाती है। इस प्रकार, यह समवर्ती वैधता के समान है। लेकिन फर्क सिर्फ इतना है कि परीक्षणों को दो अलग–अलग समय पर प्रबंधित किया जाता है और एक ही समय पर नहीं।

वृद्धिशील वैधता (इंक्रीमेंटल वैलिडिटी): यह मुख्य रूप से यह निर्धारित करने के लिए किया जाता है कि क्या वर्तमान मनोवैज्ञानिक परीक्षण, मनोवैज्ञानिक इकाई किसके मापन के लिए उसका निर्माण हुआ है, के विषय में पहले से ही उपलब्ध परीक्षणों की तुलना में अधिक जानकारी देगा।

विश्वसनीयताः विश्वसनीयता समय की अवधि के दौरान मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की अनुकूलता को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, जब एक निश्चित दिन पर और फिर छह महीने के बाद एक पैमाने की मदद से एक मेज़ की लंबाई को मापा जाए, प्राप्त लंबाई समान होगी। इस प्रकार, पैमाने को लंबाई को मापने के लिए सुसंगत साधन के रूप में कहा जा सकता है। यह तुलनात्मक रूप से आसान है क्योंकि मेज़ एक मूर्त इकाई है और चूंकि इसकी लंबाई अलग–अलग नहीं होगी, जब तक कि इसे तोड़ा या इसमें कोई अन्य संशोधन नहीं किया जाता है, किसी भी स्थिति में, ऐसा संशोधन या परिवर्तन आसानी से दिखाई देगा। हालांकि, मनोवैज्ञानिक इकाइयों के मामले में जो अमूर्त हैं, विश्वसनीयता या अनुकूलता को स्थापित करना एक मुश्किल काम है। इसलिए, यदि समायोजन पर एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण विकसित किया गया है और इसे किशोरों के समूह पर लागू किया गया है, तो एक निश्चित समय पर प्राप्त किए गए स्कोर और कुछ समय बाद, जैसे कि छह महीने के बाद इन्हें लगभग समान या समरूप होने की आवश्यकता है। विश्वसनीयता को विश्वसनीयता गुणांक की मदद से निरूपित किया जा सकता है, जिसकी सांख्यिकीय रूप से गणना की जा सकती है।

एक परीक्षण की विश्वसनीयता का परीक्षण करने के लिए विभिन्न विधियां हैं, इनकी चर्चा इस प्रकार हैः

परीक्षण– पुनपरीक्षण (टेस्ट–रीटेस्ट) विधिः इस पद्धति में, किसी विशेष परीक्षण के स्कोर और पुनः स्कोर के बीच एक सहसंबंध की गणना की जाती है। प्राप्त सहसंबंध को स्पष्ट रूप से सकारात्मक होने की आवश्यकता है और कम सहसंबंध का अर्थ है, कम विश्वसनीयता। इस प्रकार, परीक्षण को एक विशेष बिंदु पर व्यक्तियों के एक निश्चित समूह पर लागू किया जाता है और फिर इसकी अनुकूलता को स्थापित करने के लिए एक समय अंतराल के बाद फिर से इसको लागू किया जाता है। हालांकि, प्रतिभागियों द्वारा अभ्यास प्रभाव, परिपक्वता, सीखने और वस्तुओं के संस्मरण जैसे कारकों के कारण परीक्षण–पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता में त्रुटि हो सकती है ।

वैकल्पिक या समान प्रारूप (अल्टरनेट और इक्विवेलेंट फॉर्मस) विधिः परीक्षण–पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता में सामने आए कुछ मुद्दों को दूर करने के लिए, वैकल्पिक प्रारूप विधि का उपयोग किया जा सकता है। इस पद्धति में परीक्षण का एक वैकल्पिक रूप विकसित किया जाता है। दोनों प्रारूपों को तब व्यक्तियों के एक ही समूह पर एक के बाद एक लागू किया जाता है और प्राप्त अंकों को अनुकूलता या विश्वसनीयता स्थापित करने के लिए सहसंबद्ध किया जाता है। इस संबंध में प्रमुख चुनौतियों में से एक परीक्षण के दो समकक्ष प्रारूपों की संरचना करना है।

अर्ध–विच्छेद (स्प्लिट–हाफ) विधिः यह विधि मुख्य रूप से आंतरिक अनुकूलता पर केंद्रित है। यह वैकल्पिक प्रारूपों पद्धति के दोषों को दूर करने में मदद कर सकता है क्योंकि केवल एक परीक्षण को विकसित और लागू किया जाता है। अपने नाम के अनुसार, परीक्षण को तब आधे में विभाजित किया जाता है। एक महत्वपूर्ण प्रश्न जो उत्पन्न हो सकता है वह यह है कि परीक्षण को कैसे विभाजित किया जा सकता है। एक तरीका यह है कि इसे उपरोक्त 50% वस्तुओं और नीचे की 50% वस्तुओं को अलग कर आधे में विभाजित किया जा सकता है। हालांकि यह तब काम नहीं करेगा जब परीक्षण एक शक्ति परीक्षण है जिसमें कठिनाई का स्तर बढ़ रहा है। एक बेहतर तरीका यह है कि इसे वैकल्पिक वस्तु के आधार पर विभाजित किया जाए, जैसे कि सम संख्या वाली वस्तुओं को एक भाग में और विषम संख्या वाली वस्तुओं को दूसरे में विभाजित किया जाए । जैसे ही स्कोर प्राप्त हो जाता है तब आंतरिक अनुकूलता प्राप्त करने के लिए दोनों भागों के बीच सहसंबंध की गणना की जा सकती है। स्पीयरमैन–ब्राउन पूर्वानुमान सूत्र का उपयोग सुधार की गणना के लिए किया जा सकता है अन्यथा विश्वसनीयता केवल आधे परीक्षण के लिए प्राप्त की जाती है। इस पद्धति का उपयोग उन परीक्षणों के साथ प्रभावी ढंग से किया जा सकता है जिनमें बड़ी संख्या में आइटमस हैं जो समान मनोवैज्ञानिक इकाई को मापते हैं।

कुडर–रिचर्डसन विश्वसनीयता और अल्फा गुणांक (α): कुदर–रिचर्डसन विश्वसनीयता अंतर–वस्तु अनुकूलता को इंगित करता है और मुख्य रूप से इसका प्रयोग उन मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के लिए किया जाता है जिनमें एक से अधिक उत्तर वाले आइटम हैं जैसे कि रिक्त स्थान भरें वाले आइटम, संक्षिप्त उत्तर की मांग वाले आइटम इत्यादि। इसमें मनोवैज्ञानिक परीक्षण का सिर्फ एक प्रारूप है और इसे एक ही बार में लागू किया जाता है। चूंकि इस पद्धति का ध्यान अंतर–वस्तु अनुकूलता पर है, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि परीक्षण आइटम प्रकृति में समरूप हो। जब आइटम विषम होते हैं, तो प्राप्त गुणांक कम होगा।

गुणांक अल्फा, जिसे क्रोनबैक अल्फा गुणांक के रूप में भी जाना जाता है, को कुदर–रिचर्डसन विश्वसनीयता (वीराराघवन और शेटगोवेकर, 2016) के विस्तार के रूप में कहा जा सकता है। इसका उपयोग उन परीक्षणों के लिए किया जा सकता है जिनके दो से अधिक उत्तर हैं और इस प्रकार लिकर्ट स्केल के लिए भी इसका उपयोग किया जा सकता है । यह भी आंतरिक अनुकूलता पर केंद्रित है।

गणक (स्कोरर) विश्वसनीयताः मनोवैज्ञानिक परीक्षण गणक विश्वसनीयता को प्राप्त करने के लिए भी प्रासंगिक है क्योंकि परीक्षण व्यवस्थापक और गणक के कारण भी त्रुटि भिन्नता हो सकती है। गणक विश्वसनीयता दो परीक्षण गणको द्वारा एक ही परीक्षण के लिए आइटम स्कोर करके और फिर, उनके द्वारा दिए गए स्कोर के बीच सहसंबंध गुणांक की गणना करके स्थापित की जा सकती है।

मानकीकरण और मानदंड

मानकीकरण और मानदंड भी मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के महत्वपूर्ण पहलू हैं और इनका विवरण मैनुअल में किया जाता है जो परीक्षण के साथ आता है। मनोवैज्ञानिक परीक्षण यह दर्शाता है कि विभिन्न मनोवैज्ञानिक इकाइयों के संदर्भ में व्यक्ति एक दूसरे से कैसे भिन्न हैं। और एक व्यक्ति में ऐसी इकाइयों की उपस्थिति और स्तर को पर्याप्त रूप से मापने के लिए, प्रक्रिया की एकरूपता, प्रबंधन और परीक्षण के स्कोरिंग की आवश्यकता होती है। इसे मानकीकरण की संज्ञा दी जाती है।

इसके अलावा, एक मानदंड होना भी महत्वपूर्ण है जिसे व्यक्तियों द्वारा प्राप्त अंकों की उपयुक्त व्याख्या के लिए संदर्भित किया जा सकता है। अक्सर एक परीक्षण करने और स्कोर करने के बाद, एक कच्चा स्कोर प्राप्त किया जाता है, जो अर्थहीन होता है, जब तक कि इसकी एक मानक या मानदंडों के साथ तुलना नहीं की जाती है। मानकीकरण और मानदंड स्थापित किए जाने के बाद यह सुनिश्चित किया जाता है कि परीक्षण विश्वसनीय और मान्य है। मानदंडों को प्राप्त करने के लिए, परीक्षण को बड़ी संख्या में व्यक्तियों पर लागू किया जाता है। उदाहरण के लिए, हम एक निश्चित समय में बड़ी संख्या में नवजात शिशुओं के वजन को मापकर, भारत में नवजात शिशुओं के वजन के लिए मानदंड प्राप्त कर सकते हैं। फिर इसके आधार पर, मानदंड बनाए जा सकते हैं। एक औसत अंक भी प्राप्त किया जाएगा। इस प्रकार, किसी भी नवजात शिशु के वजन की तुलना मानदंडों के साथ की जा सकती है, यह समझने के लिए कि वे कहां पर अंकित हैं और तदनुसार व्याख्या की जाती है।

मनोविज्ञान में, जब विभिन्न मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के लिए मानदंड बनाए जाते हैं, तो लिंग, संस्कृति, भौगोलिक स्थिति इत्यादि विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए और इस प्रकार विभिन्न समूहों के लिए अलग मानदंड बनाए जा सकते हैं। और इन विवरणों को परीक्षण मैनुअल में स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, पहले के उदाहरण को लेते हुए, भारत में नवजात शिशुओं के वजन के मानदंड जर्मनी या अमेरिका में नवजात शिशुओं के वजन से भिन्न होंगे।

परीक्षण के प्रकार

मनोवैज्ञानिक परीक्षण विभिन्न प्रकार के होते हैं। इनकी चर्चा इस प्रकार हैः

व्यक्तिगत परीक्षणः परीक्षण जो किसी एकल व्यक्ति पर किए जाते हैं। उदाहरण के लिए, वेश्लर एडल्ट इंटेलिजेंस स्केल (डब्ल्यूएआईएस), स्टैनफोर्ड– बिनेट इंटेलिजेंस स्केल (एसबी), भाटिया बैटरी।

समूह परीक्षणः ऐसे परीक्षणों को एक ही समय में व्यक्तियों के समूह पर लागू किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, नियो पीआई और मिनेसोटा मल्टीफैसिक पर्सनैलिटी इन्वेंटरी।

गति परीक्षणः एक गति परीक्षण उन वस्तुओं का समावेश होता है जो समान कठिनाई स्तर की होती हैं, हालांकि परीक्षण को पूरा करने के लिए एक निश्चित समय अवधि प्रदान की जाती है।

शक्ति परीक्षणः एक शक्ति परीक्षण उन वस्तुओं का समावेश होता है जो उनके कठिनाई के स्तर के संदर्भ में धीरे–धीरे बढ़ती हैं। हालांकि यहां परीक्षण पूरा करने की कोई समय सीमा नहीं है।

मौखिक परीक्षणः एक पेपर पेंसिल परीक्षण को एक मौखिक परीक्षण के रूप में कहा जा सकता है जहां भाषा का उपयोग करके वस्तुओं का उल्लेख किया जाता है। उदाहरण के लिएः 16 पीएफ और आइजेंक पर्सनैलिटी इन्वेंटरी।

अमौखिक परीक्षणः इस प्रकार के परीक्षण में कुछ आँकड़ों और प्रतीकों का उपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, रेवेन्स प्रोग्रेसिव मैट्रिक्स। इसमें भाषा का उपयोग केवल परीक्षण लेने वाले व्यक्ति को निर्देश देने के लिए किया जा सकता है।

प्रदर्शन परीक्षणः प्रदर्शन परीक्षण में, परीक्षा देने वाले व्यक्ति को कुछ कार्य करने होते हैं। उदाहरण के लिएः ऐलेक्जेण्डर पासएलोंग टेस्ट और कोहस ब्लॉक डिज़ाइन टेस्ट।

वस्तुनिष्ठ परीक्षणः वस्तुनिष्ठ परीक्षणों में, व्यक्ति कुछ सही उत्तरों में से चुनाव करता है जो पहले से तय किए जाते हैं। इसमें स्कोरर की ओर से किसी भी व्यक्तिपरकता से बचा जाता है। प्रतिक्रियाएं सही या गलत या एक से अधिक विकल्प के रूप में भी हो सकती हैं या यहाँ तक कि तरह एक रेटिंग स्केल जैसे लिकर्ट स्केल या थर्स्टन स्केल का इस्तेमाल किया जा सकता है। उदाहरण के लिएः नियो पर्सनैलिटी इन्वेंटरी।

प्रक्षेपी (प्रोजेक्टिव) परीक्षणः ये प्रकृति में व्यक्तिपरक होते हैं। यहां, परीक्षार्थी को कुछ अर्ध संरचित या असंरचित उत्तेजनाओं का जवाब देने के लिए कहा जा सकता है। प्रतिक्रियाओं की तब संचालक द्वारा व्याख्या की जाती है, जिससे व्यक्तिपरकता आ सकती है। प्रक्षेपी परीक्षणों के उदाहरण हैं– रोर्शा इंकब्लॉट टेस्ट, सोमैटिक इंकब्लोट सीरीज़, सेंटेंस कम्प्लीशन टेस्ट, थीमैटिक अपरसेप्शन टेस्ट और चिल्ड्रन अपरसेप्शन टेस्ट।

उपरोक्त के अलावा, मनोवैज्ञानिक परीक्षण भी निम्नानुसार वर्गीकृत किए जा सकते हैं :

बुद्धि परीक्षणः विभिन्न बुद्धि परीक्षण होते हैं जिनका उपयोग व्यक्तियों की बुद्धिमत्ता को मापने के लिए किया जाता है। बुद्धिमत्ता को पर्यावरण के साथ तालमेल और सामना करने की क्षमता के रूप में वर्णित किया जा सकता है। बिने और साइमन (1960) ने बुद्धिमत्ता को एक व्यक्ति की पर्याप्त निर्णय लेने की क्षमता , तर्क की क्षमता और समझने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया। वेश्लर (1944, पृष्ठ 3) ने बुद्धि को "उद्देश्यपूर्ण ढंग से कार्य करने, तर्कसंगत सोचने और अपने पर्यावरण से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए व्यक्ति की समग्र या वैश्विक क्षमता" के रूप में परिभाषित किया। ये परीक्षण अक्सर शैक्षिक और नैदानिक सेट अप में उपयोग किए जाते हैं। बुद्धि परीक्षण के उदाहरण हैं वेश्लर इंटेलिजेंस स्केल फॉर चिल्ड्रन (डब्ल्यूआईएससी), स्टैनफोर्ड– बिनेट इंटेलिजेंस स्केल (एसबी), भाटिया बैटरी।

व्यक्तित्व परीक्षणः इनका उपयोग व्यक्तियों के व्यक्तित्व को मापने के लिए किया जाता है। लार्सन और बूस (2018) ने व्यक्तित्व को मनोवैज्ञानिक लक्षणों और तंत्रों के संग्रह के रूप में परिभाषित किया है जो स्थिर और संगठित हैं और जिसका एक व्यक्ति पर प्रभाव पड़ता है और साथ ही वह अपने शारीरिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक वातावरण को कैसे प्रभावित करता है, इस पर भी प्रभाव पड़ता है। इसे उनकी सोच, भावना और उनके व्यवहार करने के विधियां के संबंध में व्यक्तियों के बीच अंतर के रूप में भी समझाया जा सकता है (एपीए, 2019)। व्यक्तित्व परीक्षणों का उपयोग व्यापक रूप से नैदानिक, शैक्षिक, परामर्श, औद्योगिक और संगठनात्मक सेटअप आदि विभिन्न सेटअपों में किया जाता है। व्यक्तित्व परीक्षण के उदाहरण हैं आइजेंक पर्सनैलिटी इन्वेंटरी, थीमेटिक अपरसेप्शन टेस्ट (टीएटी), सोमैटिक इंकब्लोट सीरीज़ (एसआईएस)।

अभिक्षमता परीक्षणः ऐसे परीक्षण हैं जो किसी विशेष क्षेत्र में किसी व्यक्ति के पास मौजूद क्षमता / क्षमताओं को मापते हैं। ये स्कूलों में और यहां तक कि चयन के उद्देश्य से औद्योगिक सेट अप में भी लागू किए जाते हैं। वे बताते हैं कि क्या कोई व्यक्ति उस क्षेत्र में प्रशिक्षण के बाद प्रदर्शन कर पाएगा या नहीं। उदाहरण के लिए, नृत्य या संगीत के लिए योग्यता रखने वाला व्यक्ति यदि प्रशिक्षण दिया जाता है तो क्षेत्र में अच्छा करेगा।एप्टीट्यूड परीक्षण के उदाहरण डिफरेंशियल एप्टीट्यूड टेस्ट, सीशोर म्यूजिकल एप्टीट्यूड टेस्ट हैं।

अभिरुचि सूचियांः ये व्यक्तियों की रुचियो को मापते हैं। कैरियर के निर्णय लेने में योग्यता के रूप में रुचि महत्वपूर्ण है और इस प्रकार इन परीक्षणों का उपयोग अक्सर शैक्षिक सेटअप में भी किया जाता है। अभिरुचि सूचि का उदाहरण है वोकेशनल इंटरेस्ट इन्वेंटरी।

अभिवृत्ति परीक्षणः ये परीक्षण घटनाओं, अन्य व्यक्तियों, वस्तुओं आदि के प्रति एक व्यक्ति के अभिवृत्ति को मापते हैं। अक्सर अभिवृत्ति परीक्षणों में थर्स्टन और लिकर्ट पैमाने का उपयोग किया जाता है। ये महिलाओं, स्वास्थ्य आदि के प्रति अभिवृत्ति को माप सकते हैं। अभिवृत्ति परीक्षण के उदाहरण हैं

उपलब्धि परीक्षणः ऐसे परीक्षण भी हैं जो व्यक्तियों की उपलब्धि को मापते हैं। वे मुख्य रूप से कुछ शैक्षणिक क्षेत्र में एक व्यक्ति के सीखने का परीक्षण करते हैं। इस तरह के परीक्षण अक्सर शैक्षिक सेटअप में उपयोग किए जाते हैं। एकेडमिक अचीवमेंट टेस्ट और मैथमेटिक्स अचीवमेंट टेस्ट उपलब्धि परीक्षणों के उदाहरण हैं।

परीक्षण का प्रबंधन और उसकी स्कोरिंग/गणना

मनोविज्ञान के एक छात्र के रूप में और विशेष रूप से जब हम मनोवैज्ञानिक परीक्षण के विषय में सीख रहे हैं, तो हमें न केवल यह समझने की आवश्यकता है कि मनोवैज्ञानिक परीक्षण और मनोवैज्ञानिक परीक्षण और प्रासंगिक अवधारणाएं जैसे विश्वसनीयता, वैधता, मानकीकरण और मानदंड क्या हैं, लेकिन हमें इसके विषय में भी विचार करना होगा एक परीक्षण का प्रबंधन और इसे स्कोर कैसे किया जाता है ।

एक परीक्षण का प्रबंधन इस आधार पर भिन्न होगा कि यह किसी व्यक्ति को या समूह को दिया गया है या नहीं। जब इसे किसी व्यक्ति को दिया जाता है, तो इसे एकल व्यक्ति को दिया जाएगा और तदनुसार तैयारी की जानी चाहिए। और अगर इसे एक समूह पर लागू करना है, तो बैठने की पर्याप्त व्यवस्था की आवश्यकता है और उस दिशा में आवश्यक तैयारी की आवश्यकता है।

किसी भी विधियां से यह याद रखना है कि परीक्षण को व्यवस्थित और मानकीकृत विधियां से किया जाता है। समान निर्देश (जैसा कि मैनुअल में निर्दिष्ट है) परीक्षार्थियों को दिया जाना है।

परीक्षण को एक व्यक्ति या एक समूह पर लागू करने से पहले, सुनिश्चित करें कि परीक्षण प्रबंधन के लिए आवश्यक सभी सामग्री तैयार है। यह भी सुनिश्चित करें कि जिन पर्यावरण स्थितियों में परीक्षण किया जाएगा वे अनुकूल हैं और किसी भी विकर्षण से मुक्त हैं। यह भी महत्वपूर्ण है कि आप बारीकी से परीक्षण के मैनुअल को पढ़ें और आपको परीक्षण के द्वारा मापी जाने वाली अवधारणा के विषय में अच्छी जानकारी हो।

परीक्षण करते समय निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार किया जाना चाहिएः

- उस उद्देश्य पर ध्यान दें जिसके लिए परीक्षण किया गया है। कुछ विशेष चरों पर किसी व्यक्ति को मापने के लिए परीक्षण किए जाते हैं। और वास्तव में क्या मापा जाना है इसके आधार पर, एक परीक्षण का चयन करने की आवश्यकता है।

उदाहरण के लिए, व्यक्तित्व को 16 पीएफ और साथ ही NEO-PIकी मदद से मापा जा सकता है। आप क्या मापना चाहते हैं, इसके आधार पर आपको एक परीक्षण का चयन करना होगा। यह महत्वपूर्ण है कि एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एक ऐसे व्यक्ति द्वारा किया जाता है जो ऐसा करने के लिए आवश्यक योग्यता, दक्षता और कौशल रखता है (जहाँ तक इस पाठ्यक्रम के आपके प्रायोगिक घटक का संबंध है, मापा जाने वाले चर पहले ही निर्दिष्ट किए जा चुके हैं और आप सीखेंगे कि कैसे निर्दिष्ट चर को मापने के लिए परीक्षण का प्रबंधन और गणना की जाती है)।

- यह महत्वपूर्ण है कि आप पूरी तरह से परीक्षण के मैनुअल को पढ़ें और निर्देश, प्रक्रिया, पूरे परीक्षण प्रबंधन प्रक्रिया की अवधि और इस संबंध में किसी भी अन्य प्रासंगिक जानकारी से परिचित हैं।आमतौर पर मैनुअल में परीक्षण के द्वारा मापे जाने वाले चर के विषय में पृष्ठभूमि की जानकारी होगी, निर्देशों, विश्वसनीयता, वैधता के विषय में जानकारी के अलावा, परीक्षण और मानदंडों को कैसे स्कोर किया जाए, इस संबंध में भी जानकारी प्रदान की जाएगी।
- सुनिश्चित करें कि परीक्षण प्रबंधन के लिए आवश्यक सभी विषयवस्तु प्रबंधन से पहले तैयार रखी गई है।
- सुनिश्चित करें कि जिस कमरे में परीक्षण किया जाएगा वह तापमान और रोशनी के संदर्भ में उपयुक्त है। यह भी सुनिश्चित करें कि यह किसी भी विक्षेप से मुक्त है। परीक्षार्थी/परीक्षार्थियों के लिए बैठने की आरामदायक व्यवस्था होनी चाहिए।
- साथ ही परीक्षण प्रबंधन के दौरान अपनाए जाने वाले नैतिक मुद्दों जैसे गोपनीयता, एकांतता इत्यादि पर ध्यान केंद्रित करें। हमने पहली इकाई में नैतिकता के विषय में संक्षेप में चर्चा की और यह इस संदर्भ में प्रासंगिक भी हैं।
- परीक्षण का प्रबंधन करते समय, परीक्षार्थी को स्पष्ट रूप से निर्देश देने की आवश्यकता है। इसके अलावा यदि कोई संदेह या सवाल है, तो उपयुक्त स्पष्टीकरण / उत्तर देना होगा।
- परीक्षण का प्रबंधन करते समय व्यक्तिगत विशेषताओं को ध्यान में रखें। आपके अभिवृत्ति में भिन्नता हो सकती है जब आप बच्चों, बुजुर्गों, विकलांग लोगों इत्यादि के लिए परीक्षण का प्रबंधन करते हैं।साथ ही भाषा और संस्कृति पर ध्यान देने की जरूरत है।
- परीक्षण करते समय सबसे महत्वपूर्ण बात यह भी है कि परीक्षार्थियों के साथ तालमेल भी बनाया जाए है ताकि उनकी परीक्षा को लेकर चिंता कम हो जाए और वे परीक्षण प्रबंधन प्रक्रिया के दौरान अपना पूरा सहयोग दें।
- परीक्षण के प्रबंधन के बाद, यदि आवश्यक हो तो डिब्रीफिंग की जाती है, जहां परीक्षण से पहले खुलासा ना की गई किसी भी जानकारी के बारे परीक्षार्थी को सूचित किया जाना चाहिए। परीक्षार्थी से अन्तरावलोकन रिपोर्ट भी ली जा सकती है।
- परीक्षण प्रतिक्रियाओं को फिर से परीक्षण मैनुअल में दिए गए निर्देशों और स्कोरिंग कुंजी के अनुसार स्कोर किया जा सकता है और दिए गए मानदंडों के आधार पर व्याख्या की जा सकती है ।

- व्याख्या करने के बाद परीक्षा परिणाम को उपयुक्त तरीके से परीक्षार्थियों को सूचित किया जाना चाहिए।

कुछ भारतीय मनोवैज्ञानिक परीक्षण नीचे दिए गए हैं। इनके अलावा, शैक्षणिक परामर्शदाता बीपीसीसी–110 में सम्मिलित विषयों के आधार पर किसी अन्य मनोवैज्ञानिक परीक्षण का चयन कर सकते हैं:

- एस. एल. चोपड़ा (हिंदी) द्वारा एटिट्यूड स्केल टुवर्ड्स एजुकेशन (एएसटीई)।
- के.के. तिवारी (हिंदी) द्वारा फंडामेंटल राइट्स एटिट्यूड स्केल।
- एम. राजमानिकम (अंग्रेज़ी) द्वारा नॉइज़ एटिट्यूड स्केल।
- एम. राजमानिकम (अंग्रेज़ी) द्वारा टेम्परेचर एटिट्यूड स्केल।
- डॉ. एस. राजशेखर (अंग्रेज़ी) द्वारा साइबर क्राइम अवेयरनेस ।
- डॉ. सुभाष सरकार और प्रसेनजित दास (अंग्रेज़ी) द्वारा इंटरनेट और सोशल नेटवर्किंग साइट्स एटिट्यूड स्केल।
- डॉ. आज्ञा जीत सिंह और डॉ. एच.एस. चीमा द्वारा स्पोर्ट्स स्पेसिफिक पर्सनैलिटी टेस्ट (अंग्रेजी/हिंदी)।
- एम्प्लॉय मेंटल हेल्थ डॉ. जगदीश (अंग्रेजी/हिंदी) द्वारा।

प्रयोग 1 के लिए अकादमिक परामर्शदाता द्वारा अपनाई जाने वाली प्रक्रिया

प्रायोगिक सत्र का संचालन अध्ययन केंद्र पर अकादमिक परामर्शदाता (एकेडमिक काउंसलर) द्वारा किया जाएगा। अकादमिक परामर्शदाता द्वारा अपनाई जाने वाली प्रक्रिया इस प्रकार है:

1) परीक्षण के मैनुअल को अच्छी तरह से देखें।
2) कक्षा में शिक्षार्थियों को परीक्षण के विषय में विस्तार से बताएं।
3) परीक्षण का परिचय निम्नलिखित संदर्भ में दें:
   - परीक्षण का इतिहास
   - लेखक
   - परीक्षण का विकास
   - परीक्षण की विशेषताएं (जैसे वस्तुओं की संख्या, आयाम, विश्वसनीयता, वैधता)
   - प्रशासन
   - स्कोरिंग
   - व्याख्या
4) परीक्षण की शुरूआत के बाद, शिक्षार्थियों को यह प्रदर्शित करें कि परीक्षण को कैसे प्रशासित किया जाए।
5) प्रशासन के प्रदर्शन में निम्नलिखित सम्मिलित होंगे:
   क) परीक्षण की तैयारी, उदाहरण के लिए, परीक्षण सामग्री (परीक्षण पुस्तिका, उत्तर पत्रक, स्टॉपवॉच) तैयार रखना।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

ख) प्रयोज्य के साथ संबंध स्थापित करना, उसे सहज महसूस कराना

ग) परीक्षण की व्याख्या करना (प्रक्रिया, समय सीमा, सावधानियां)

घ) परीक्षण से गुजरने के लिए सूचित सहमति लेना और प्रतिभागी को सूचित करना कि परीक्षण के निष्कर्ष गोपनीय रहेंगे।

ई) जहां भी लागू हो, सत्र रिकॉर्ड करने की अनुमति लेना।

च) मैनुअल से परीक्षण प्रशासन के लिए निर्देशों को पढ़ना और शिक्षार्थियों को यह दिखाना कि उन्हें निर्देश कहां से पढ़ना है।

छ) परीक्षण प्रशासन के विषय में प्रतिभागी के मन में सभी संदेहों को दूर करना।

ज) प्रतिभागी परीक्षण देता है।

झ) परीक्षण पूरा होने के बाद प्रतिभागी से उत्तर पुस्तिका लेना।

6) शिक्षार्थियों को स्कोरिंग प्रक्रिया (मैनुअल में दी गई) के विषय में समझाएं।

7) आँकडा की व्याख्या कैसे करें समझाएं।

8) शिक्षार्थियों से जोड़े में एक–दूसरे पर परीक्षण करने और उसकी निगरानी करने के लिए कहें।

9) शिक्षार्थी अब प्रशासन, स्कोर और व्याख्या करेंगे।

10) शिक्षार्थियों को प्रायोगिक नोटबुक में परीक्षण की एक रिपोर्ट लिखनी होगी जिसका मूल्यांकन अकादमिक परामर्शदाताओं द्वारा किया जाएगा।

11) प्रायोगिकको प्रायोगिक नोटबुक में रिपोर्ट करना।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, आप प्रायोगिक घटक में परीक्षण कर रहे होंगे, इस प्रकार आप प्रायोगिक नोटबुक में प्रक्रिया को रिकॉर्ड करेंगे।

4.0 प्रयोग 2: गहन साक्षात्कार विधि

यह एक वैकल्पिक प्रयोगहै और अकादमिक परामर्शदाता इस प्रायोगिक का चयन कर सकते हैं।

हमने इस पाठ्यक्रम की इकाई 3 में आँकडा संग्रह की एक विधि के रूप में साक्षात्कार के विषय में चर्चा की। आपका एक प्रयोग साक्षात्कार पद्धति का उपयोग करना हो सकता है। आपकी सीखने की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए, हमने वर्तमान इकाई में साक्षात्कार विधि का विवरण दिया है और यह भी विवरण दिया है कि साक्षात्कार प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण कैसे किया जाना है।

साक्षात्कार यह आँकडा संग्रह के सबसे अधिक इस्तेमाल किए जाने वाले तरीकों में से एक है। आँकडा संग्रह के विभिन्न तरीकों को उस सीमा के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है जहां वे प्रत्यक्ष हैं। उदाहरण के लिए, आँकडा संग्रह का एक तरीका प्रतिभागियों से प्रश्न पूछना हो सकता है और दूसरा रोर्शा इंकब्लॉट सीरीज व अन्य प्रयोजन तकनीकों का इस्तेमाल करके आँकडा एकत्र किया जा सकता है। साक्षात्कार को एक प्रत्यक्ष विधि के रूप में कहा जा सकता है जो प्रतिभागियों से सीधे संबंधित जानकारी एकत्र करने में मदद कर सकता है। हालांकि, यह संभव है कि सहभागी कुछ सूचनाओं को प्रकट करने में सक्षम नहीं हैं या नहीं। जिस स्थिति में साक्षात्कार जैसी प्रत्यक्ष विधि काम नहीं करेगी। कर्लिंगर (1995, पृष्ठ 441) ने साक्षात्कार को "एक आमने–सामने की अंतरवैयक्तिक क्रिया स्थिति जिसमें एक व्यक्ति, साक्षात्कारकर्ता, दूसरे व्यक्ति जिसका साक्षात्कार किया जाना है, प्रतिवादी, से शोध समस्या के प्रासंगिक उत्तर प्राप्त करने के लिए परिकल्पित प्रश्न पूछता है" के रूप में वर्णित किया

है। इस परिभाषा में मुख्य मुख्य बिंदु यह है कि इसमें सम्मिलित होने वाले दो मुख्य व्यक्ति, साक्षात्कारकर्ता और साक्षात्कारदाता हैं, जो आमने–सामने बातचीत में सम्मिलित हैं। और इस बातचीत के दौरान, साक्षात्कारकर्ता साक्षात्कारदाता से कुछ सवाल पूछेंगे, जिससे वह प्रतिक्रियाएं प्राप्त कर सके।

साक्षात्कार के मुख्य पहलुओं में से एक **साक्षात्कार अनुसूची** है। साक्षात्कार अनुसूची और कुछ नहीं है, बल्कि प्रश्न हैं जो साक्षात्कारकर्ता को साक्षात्कार के साथ आगे बढ़ने की उम्मीद के साथ साक्षात्कारदाता से कुछ दिशानिर्देशों के साथ पूछने होते हैं। एक साक्षात्कार अनुसूची तैयार करना एक चुनौती है और बहुत सारी योजना और कार्य की आवश्यकता होती है। एक साक्षात्कार अनुसूची तैयार करते समय, किसी को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता होती है कि वाक्य विशिष्ट और स्पष्ट हैं और दोहरे अर्थ वाले या अस्पष्ट शब्दों की कमी है। हालांकि साक्षात्कार अनुसूची महंगी होने के साथ–साथ समय लेने वाली भी है, लेकिन साक्षात्कार अनुसूची की मदद से प्राप्त होने वाली जानकारी की मात्रा बड़ी है।

इस प्रकार, एक साक्षात्कार अनुसूची तैयार करने से पहले शोध समस्या और शोध के केंद्र के विषय में उपयुक्त पृष्ठभूमि की जानकारी को एकत्र किया जाना चाहिए। एक साक्षात्कार अनुसूची में मुख्य रूप से 'पहचान सूचना या फेस शीट, जनगणना–प्रकार की जानकारी और समस्या की सूचना' सम्मिलित होंगे (केर्लिंगर , 1995, पृष्ठ 441)। पहचान सूचना मुख्य रूप से आवश्यक है ताकि अनुसूची की पहचान की जा सके। जनगणना–प्रकार की जानकारी सामाजिक जनसांख्यिकीय जानकारी से संबंधित है जिसमें आयु, लिंग, शिक्षा, व्यवसाय, वैवाहिक स्थिति, सामाजिक–आर्थिक स्थिति इत्यादि सम्मिलित हैं और समस्या सूचना में शोध समस्या से संबंधित प्रश्न सम्मिलित हैं जिसके लिए साक्षात्कारकर्ता से प्रतिक्रियाएँ प्राप्त की जाती हैं। साक्षात्कार अनुसूची में आइटम असीमित उत्तर वाले या सीमित उत्तर वाले हो सकते हैं। असीमित उत्तर वाले आइटम में, उत्तर के लिए एक फ्रेम प्रदान किया जाता है, लेकिन अन्यथा साक्षात्कारकर्ता को उस तरह से जवाब देने की स्वतंत्रता है जो वह चाहता है। सीमित उत्तर वाले वस्तुओं में कुछ निश्चित विकल्प प्रदान किए जाते हैं, जिसमें से साक्षात्कारकर्ता को चयन करना होता है, इस प्रकार उत्तर को सीमित किया जाता है। कुछ मामलों में, स्केल का उपयोग भी साक्षात्कार अनुसूची में किया जाता है, जहां सहमति या असहमति की डिग्री के संदर्भ में प्रतिक्रियाएं प्रदान की जा सकती हैं। उदाहरण के लिए, सहमत, निर्विवाद, असहमत या अक्सर, कभी–कभी, कभी ही, कभी नहीं। शोधकर्ता या साक्षात्कारकर्ता को यह ध्यान से तय करने की आवश्यकता है कि वह शोध समस्या के आधार पर अपने साक्षात्कार कार्यक्रम में किस प्रकार की वस्तुओं को चाहता है। साक्षात्कार करते समय ऑडियो और वीडियो रिकॉर्डिंग को साक्षात्कारदाता(ओं) की अनुमति के साथ किया जा सकता है।

प्रश्नों को तैयार करते समय ध्यान रखने की आवश्यकता है और निम्नलिखित बातों को सुनिश्चित किया जाना चाहिएः

- प्रश्न शोध समस्या पर ध्यान केंद्रित करता है।
- यह अस्पष्ट नहीं है और किसी भी अस्पष्टता का अभाव है।
- एक प्रश्न उत्तर को जानने के लिए है और उससे एक और प्रश्न उत्पन्न नहीं होना चाहिए।
- अध्ययन की पृष्ठभूमि की जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता है ताकि शोधकर्ता या साक्षात्कारकर्ता सुनिश्चित हो सके कि उत्तरदाताओं के पास पूछे गए प्रश्नों के उत्तर होंगे और यह सुनिश्चित करने के लिए कि साक्षात्कारदाता की ओर से प्रश्न के प्रतिरोध की संभावना कम या नगण्य होगी।

- ऐसा प्रश्न जो सामाजिक स्वछंदता से प्रभावित हो सकता है एक प्रतिक्रिया को ग्रहण कर सकता है को टाला जा सकता है ।

साक्षात्कार के प्रकार

साक्षात्कार को निम्नानुसार वर्गीकृत किया जा सकता हैः

1. **संरचित साक्षात्कारः** इसे मानकीकृत साक्षात्कार भी कहा जाता है । यह प्रकार अधिक मानकीकृत है जैसा कि नाम से पता चलता है और इसमें पूर्वनिर्धारित प्रश्न सम्मिलित हैं जो कुछ पूर्वनिर्धारित क्रम में अनुक्रमित हैं और निश्चित रूप से शब्दबद्ध भी हैं। इस प्रकार, साक्षात्कारकर्ता को पूछे गए प्रश्नों में कोई बदलाव करने की अधिक स्वतंत्रता नहीं है। इस तरह के एक साक्षात्कार के लिए साक्षात्कार अनुसूची को अग्रिम तौर पर और बहुत विचार–विमर्श के साथ अच्छी तरह से तैयार किया जाता है। एक फायदा यह है कि शोध की समस्या पर ध्यान देने के साथ साक्षात्कार अनुसूची पहले से तैयार की जाती है। हालांकि एक नुकसान यह हो सकता है कि इस तरह के साक्षात्कार शेड्यूल को तैयार करना एक संपूर्ण और समय लेने वाली प्रक्रिया है और शोधकर्ता के लिए संशोधन करने की बहुत गुंजाइश नहीं है।

2. **असंरचित साक्षात्कारः** इसे अमानकीकृत साक्षात्कार भी कहा जा सकता है, साक्षात्कार का यह प्रकार अधिक लचीला है और एक तरह से सवाल पूर्व निर्धारित नहीं हैं और साक्षात्कारकर्ता को सवालों का अनुक्रम व जिस तरह से भी वह सवाल पूछना चाहता है को तय करने की पूरी स्वतंत्रता है। यह एक तरह से साक्षात्कारकर्ता को स्थिति की मांग के अनुसार कोई भी संशोधन करने की आवश्यक स्वतंत्रता प्रदान करता है।

3. **अर्ध–संरचित साक्षात्कारः** इस तरह का साक्षात्कार संरचित और असंरचित साक्षात्कार का एक संयोजन है। एक साक्षात्कार अनुसूची होगी जो पूर्व निर्धारित है, लेकिन साक्षात्कारकर्ता को इसमें सुधार और बदलाव करने की पूरी स्वतंत्रता है।

वर्तमान प्रायोगिक में आप साक्षात्कारकर्ताओं से डेटा एकत्र करने के लिए अर्ध–संरचना साक्षात्कार का उपयोग करेंगे।

साक्षात्कार के दौरान पूछे गए प्रश्न स्पष्ट और विशिष्ट होने चाहिए और इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि साक्षात्कारकर्ता प्रश्न को समझ गया है। प्रश्नों को विकसित करने के बाद, आप 'पायलटिंग' भी कर सकते हैं, अर्थात अपने द्वारा विकसित प्रश्नों के विषय में विशेषज्ञों से राय ले सकते हैं। विशेषज्ञों द्वारा प्रश्नों का आलोचनात्मक विश्लेषण किया जा सकता है और उन्हें हटाने, संशोधित करने या सुधारने के लिए सुझाव दिए जा सकते हैं। प्रश्नों को प्रतिभागियों के एक छोटे समूह (शोध की आबादी के अनुसार) को उनकी प्रभावशीलता की जांच करने के लिए भी प्रशासित किया जा सकता है। फिर शोध के लिए प्रश्नों को अंतिम रूप दिया जा सकता है

कुछ प्रकार के प्रश्न, जो पूछे जा सकते हैं, वे इस प्रकार हैंः

- **वार्मअप प्रश्नः** इनका उपयोग प्रतिभागियों के साथ संबंध बनाने के लिए किया जा सकता है। उदाहरण के लिएः आप कैसे हैं? आपका दिन कैसा बीता?

- **जनसांख्यिकीय प्रश्नः** ये ऐसे प्रश्न हैं जो प्रतिभागियों के जनसांख्यिकीय विवरण, जैसे आयु, धर्म आदि एकत्र करने के लिए पूछे जाते हैं।

- **मूल प्रश्नः** वे प्रश्न जो शोध के मुख्य उद्देश्य या शोध के विषय क्षेत्र से संबंधित होते हैं, मुख्य प्रश्न कहलाते हैं। साक्षात्कारकर्ता को यह सुनिश्चित करने की

आवश्यकता है कि इन मुख्य प्रश्नों की सहायता से अधिकतम जानकारी एकत्र की जाए। और इस संबंध में, साक्षात्कारकर्ता जांच और संकेतों का भी उपयोग कर सकता है।

- **स्पष्टता देने वाले प्रश्नः** ऐसे प्रश्नों का उपयोग कुछ बिंदुओं या पहलुओं को और स्पष्ट करने के लिए किया जा सकता है जो मुख्य प्रश्नों के उत्तर में परिलक्षित होते थे।

प्रतिक्रिया को लिखा या रिकॉर्ड किया जा सकता है (साक्षात्कारकर्ताओं की पूर्व सहमति से) ताकि बाद में विषयगत विश्लेषण के दौरान उनका विश्लेषण किया जा सके।

वर्तमान व्यावहारिक में, आप साक्षात्कार डेटा का विश्लेषण करने के लिए विषयगत विश्लेषण का उपयोग करेंगे।

साक्षात्कार के लाभ

1. इस पद्धति की मदद से बहुत सारी प्रासंगिक, गहन और बड़ी मात्रा में जानकारी एकत्र की जा सकती है।
2. यह विधि कुछ गंभीर और जटिल मुद्दों (जो भावनात्मक प्रतिक्रियाएं भी पैदा कर सकती है) के संबंध में डेटा एकत्र करने के लिए उपयुक्त है।
3. यह विधि लचीली है और इसका उपयोग विभिन्न पृष्ठभूमि के विभिन्न उत्तरदाताओं के साथ किया जा सकता है।
4. चूंकि यह आमने–सामने की जाती है, इसलिए साक्षात्कारकर्ता को साक्षात्कारदाता के गैर मौखिक व्यवहार को देखने का अवसर भी मिलता है। साक्षात्कारदाता की कुछ सहज प्रतिक्रियाएं भी दर्ज की जा सकती हैं।
5. साक्षात्कारकर्ता के लिए साक्षात्कारदाता को कुछ प्रश्नों या शब्दों की व्याख्या करना या किसी भी संदेह को स्पष्ट करना संभव है, इस प्रकार उचित प्रतिक्रिया प्राप्त करने की संभावना बढ़ जाती है।
6. कुछ सहभागी उत्तर देने में प्रतिरोध प्रदर्शित कर सकते हैं, लेकिन उपयुक्त कौशल और तालमेल से साक्षात्कारकर्ता के लिए ऐसे प्रतिभागियों से प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करना संभव है।
7. साक्षात्कारकर्ता के लिए यह तुलनात्मक रूप से आसान है कि क्या साक्षात्कारदाता अवास्तविक या वास्तविक प्रतिक्रिया दे रहा है।

साक्षात्कार की सीमाएँ

1. एक उपयुक्त और पर्याप्त साक्षात्कार अनुसूची तैयार करना अपने आप में एक कार्य है और इसमें न केवल कड़ी मेहनत और समय लगता है, बल्कि विशेष स्तर की विशेषज्ञता और कौशल भी आवश्यक हैं।
2. यहां तक कि साक्षात्कार के लिए आवश्यक विशेषज्ञता और कौशल की आवश्यकता होती है।
3. यह समय लेने वाली है और इसमें लागत प्रभावशीलता भी नहीं है।
4. असीमित उत्तर वाले सवालों के जवाबों का विश्लेषण और व्याख्या करना मुश्किल हो सकता है।
5. विषय में व्यक्तिपरकता आ सकती है।

6. विश्वसनीयता और वैधता कम हो सकती है।

सामाजिक वांछनीयता के प्रभाव को खारिज नहीं किया जा सकता है।

साक्षात्कार करने की प्रक्रिया

इस प्रायोगिक को करते समय निम्नलिखित चरणों का पालन किया जाना चाहिएः

1) **एक सामाजिक मुद्दे का चयन करें**: खंड 2 में, आपने विभिन्न सामाजिक मुद्दों का अध्ययन किया है और खंड 3 और 4 में, हमने विभिन्न क्षेत्रों में सामाजिक मनोविज्ञान के अनुप्रयोग के विषय में चर्चा की है। आप चर्चा किए गए उप–विषयों में से किसी भी मुद्दे का चयन कर सकते हैं। जिन विषयों पर विचार किया जा सकता है उनमें से कुछ हैंः

   - स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार
   - पर्यावरण संबंधी व्यवहार
   - कक्षा में व्यवहार

   इससे पहले कि आप सामाजिक मुद्दे को अंतिम रूप दें, यह महत्वपूर्ण है कि आप मुद्दे या पहलू को समझें और उस संदर्भ में किए गए साहित्य या अध्ययनों की प्रासंगिक समीक्षा देखें।

   विषय का चयन एकेडमिक काउंसलर के परामर्श से किया जाना है जिसके तहत आप प्रैक्टिकल करेंगे।

2) **साक्षात्कार का उद्देश्यः** साक्षात्कार का उद्देश्य निर्दिष्ट करें।

3) **उन प्रतिभागियों की पहचान करें जिन पर आप साक्षात्कार आयोजित करेंगे**: आपको कम से कम तीन प्रतिभागियों पर साक्षात्कार आयोजित करने की आवश्यकता है। प्रतिभागियों की प्रकृति, आयु, जनसांख्यिकीय प्रोफ़ाइल आपके द्वारा चुने गए सामाजिक मुद्दे पर आधारित होगी। यह भी सुनिश्चित करें कि इन प्रतिभागियों की प्रोफ़ाइल कुछ समान है। उदाहरण के लिए, आप अपने द्वारा चुने गए सामाजिक मुद्दों/पहलू के आधार पर किशोरों, या वृद्ध वयस्कों, या डिलीवरी व्यक्तियों आदि को ले सकते हैं।

4) **एक अर्ध–संरचित साक्षात्कार का विकास करना**: चयनित सामाजिक मुद्दे/पहलू के आधार पर, आपको लगभग 10 मुख्य प्रश्नों का एक अर्ध–संरचित साक्षात्कार अनुसूची विकसित करने की आवश्यकता है। आपके पास कुछ वार्मअप, जनसांख्यिकीय और स्पष्ट करने वाले प्रश्न भी हो सकते हैं। इन सभी की सूचना आप अपनी प्रायोगिक नोटबुक में देंगे। समग्र साक्षात्कार कार्यक्रम में लगभग 20 प्रश्न हो सकते हैं।

5) **साक्षात्कार आयोजित करना**: फिर आपको साक्षात्कार करने की आवश्यकता है, जो आमने–सामने या ऑनलाइन मोड के माध्यम से हो सकता है। हालांकि आपको यह याद रखने की जरूरत है कि साक्षात्कार एक से एक का होगा। इस प्रकार, आप तीन साक्षात्कार करेंगे।

   साक्षात्कार लेते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखेंः

   - साक्षात्कार आयोजित करते समय, सुनिश्चित करें कि आपके पास पेंसिल, पेन, पेपर, साक्षात्कार अनुसूचि जैसी सभी सामग्री आपके द्वारा तैयार की गई है।
   - साक्षात्कार के लिए किसी शांत और आरामदायक जगह का चुनाव करें।

- साक्षात्कार शुरू करते ही साक्षात्कार लेने वाले के साथ तालमेल बनाएं। यह गर्म प्रश्न पूछकर किया जा सकता है।
- सुनिश्चित करें कि आप नैतिक मुद्दों का पालन करते हैं और गोपनीयता और गोपनीयता सुनिश्चित करते हैं। प्रतिभागी की सूचित सहमति भी लें।
- प्रतिभागियों के गैर–मौखिक व्यवहार का निरीक्षण करें और नोट्स बनाएं।
- यदि आप प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं को रिकॉर्ड (ऑडियो या वीडियो) करना चाहते हैं, तो सुनिश्चित करें कि आप प्रतिभागियों से पूर्व अनुमति लेते हैं।
- सत्र को शब्दशः नोट करें (क्योंकि बातचीत आपके और प्रतिभागियों के बीच हुई थी)

6) **आँकडा विश्लेषणः**आँकडा विश्लेषण विषयगत विश्लेषण की मदद से किया जाना है।

साक्षात्कार का उदाहरण

आइए एक उदाहरण की मदद से समझाते हैं।

मान लीजिए आप किशोरों द्वारा सोशल मीडिया के उपयोग पर एक साक्षात्कार करना चाहते हैं।

विषयः किशोरों द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग

उद्देश्यः किशोरों के बीच सोशल मीडिया के उपयोग का अध्ययन करना।

प्रतिभागीः दिल्ली के 3 स्कूल जाने वाले किशोर। आप प्रासंगिक सामाजिक जनसांख्यिकीय विवरण जैसे, लिंग, सामाजिक–आर्थिक स्थिति आदि के आधार पर प्रतिभागियों का वर्णन कर सकते हैं। यह चयनित विषय के आधार पर तय किया जाएगा।

अर्ध–संरचित साक्षात्कारः जिसमें वार्मअप प्रश्न सम्मिलित हैं जैसे आज तुम कैसे हो? आप इन दिनों क्या कर रहे थे? इत्यादि। कुछ जनसांख्यिकीय प्रश्न पूछकर प्रतिभागियों के विषय में जनसांख्यिकीय विवरण एकत्र करें आपके पास लगभग 10 मुख्य प्रश्न हो सकते हैं जैसे आप किस सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग करते हैं? सोशल मीडिया के उपयोग की अवधि क्या है? आप सोशल मीडिया का उपयोग किस उद्देश्य के लिए करते हैं? आपको क्या लगता है कि सोशल मीडिया का उपयोग करने के सकारात्मक पहलू क्या हैं? आपको क्या लगता है कि सोशल मीडिया के उपयोग के नकारात्मक प्रभाव क्या हैं? प्रश्न आपके साक्षात्कार के उद्देश्य पर निर्भर करेंगे। यदि आप कुछ पहलुओं को और स्पष्ट करना चाहते हैं, तो स्पष्टता देने वाले प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं, जैसे आपको क्या लगता है कि सोशल मीडिया का उपयोग आपके सामाजिक संबंधों को कैसे प्रभावित करता है?

साक्षात्कार आयोजित करनाः साक्षात्कार के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना, सामग्री तैयार रखना। अगर रिकॉर्डिंग करनी है तो रिकॉर्डर या कैमरा तैयार रखें। नैतिक मुद्दों की व्याख्या करें और सूचित सहमति प्राप्त करें। रिकॉर्डिंग से पहले अनुमति लें। प्रतिभागी के शब्दशः और गैर–मौखिक व्यवहार को भी नोट करें।

शब्दशः कैसे दर्ज किया जाता है इसका उदाहरण

साक्षात्कारकर्ता: *तो आपको क्या लगता है कि सोशल मीडिया के सकारात्मक पहलू क्या हैं?*

साक्षात्कारदाता1: *वैसे, बहुत से लोग सोचते हैं कि सोशल मीडिया खराब है, लेकिन यह मुझे अपने दोस्तों के संपर्क में रहने में मदद करता है और जब मैं ऊब जाता हूं, तो मैं इसे मनोरंजन के लिए उपयोग कर सकता हूं। मेरे माता–पिता कहते हैं कि यह खराब है और लत लगसकती है। लेकिन यह वास्तव में मुझे अपने दोस्तों से जुड़ने में मदद करता है। आप जानते हैं कि अब ब्व्टप्क 19 के कारण, मैं अपने दोस्तों से नहीं मिल पा रहा हूँ, इसलिए हम फेसबुक के संपर्क में रहते हैं। मुझे पता है कि वे क्या कर रहे हैं३३मौन३..अगर कोई नई फिल्म देखी, या किसी जगह पर गए, तो वे अपनी जन्मदिन की पार्टी कैसे मनाते हैं। यह अन्यथा बहुत उबाऊ है आप जानते हैं। मुझे यही लगता है, यह बहुत उपयोगी है और जो कुछ हो रहा है उससे मुझे अपडेट किया जा सकता है।*

अवलोकन: जब साक्षात्कारकर्ता उत्तर दे रहा था, उसने अपना सिर नीचे किया हुआ था। वह आँख से संपर्क बनाए नहीं रख रहा था।

डेटा विश्लेषण: विषयगत विश्लेषण में उल्लिखित चरणों का पालन किया जाना है।

अनुक्रिया	लेबल
वैसे, बहुत से लोग सोचते हैं कि सोशल मीडिया खराब है, लेकिन यह मुझे अपने दोस्तों के साथ संपर्क में रहने में मदद करता है और जब मैं ऊब जाता हूं, तो मैं इसे मनोरंजन के लिए उपयोग कर सकता हूं। मेरे माता–पिता कहते हैं कि यह खराब है और लत लगसकती है। लेकिन यह वास्तव में मुझे अपने दोस्तों से जुड़ने में मदद करता है। आप जानते हैं कि अब COVID 19 के कारण, मैं अपने दोस्तों से नहीं मिल पा रहा हूँ, इसलिए हम फेसबुक के संपर्क में रहते हैं। मुझे पता है कि वे क्या कर रहे हैं३३मौन३..अगर उन्होंने कोई नई फिल्म देखी, या किसी जगह का दौरा किया, तो वे अपनी जन्मदिन की पार्टी कैसे मनाते हैं। यह अन्यथा बहुत उबाऊ है आप जानते हैं। मुझे यही लगता है, यह बहुत उपयोगी है और जो कुछ हो रहा है उससे मुझे अपडेट किया जा सकता है।	सोशल मीडिया की सामान्य धारणा सोशल मीडिया का माता–पिता का नजरिया दोस्तों के संपर्क में रहें मनोरंजन दोस्तों के विषय में जानकारी सामाजिक घटनाओं के साथ अद्यतन

चरण 1डेटा से परिचित हों: डेटा से परिचित होने के लिए प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं को बार–बार पढ़ें। इस प्रकार, हमारे उदाहरण के मामले में, अर्ध–संरचित साक्षात्कार में तीन प्रतिभागियों द्वारा दिए गए प्रश्नों के उत्तरों को बार–बार पढ़ा जाता है ताकि डेटा से परिचित हो सकें।

चरण 2प्रारंभिक कोड बनाने की आवश्यकता हैः इसमें प्रतिक्रियाओं के कुछ पहलुओं को उजागर करना और इन पहलुओं को लेबल करना सम्मिलित है। इस प्रकार, आइए हम उन क्रियात्मक प्रतिक्रियाओं को देखें जिन्हें हमने पहले नोट किया था।

चरण 3विषयों की पहचान की जानी हैः तब उत्पन्न कोड को थीम के तहत वर्गीकृत किया जा सकता है। कोड की तुलना में थीम अधिक सामान्य हैं। इस प्रकार उपरोक्त कोड से, जो थीम हम उत्पन्न कर सकते हैं वे हैं

विषयः सोशल मीडिया के अन्य परिप्रेक्ष्य

कोडः सोशल मीडिया की सामान्य धारणा, सोशल मीडिया का अभिभावकीय दृष्टिकोण

विषयः सहकर्मी संबंध

कोडः दोस्तों के संपर्क में रहें, दोस्तों के विषय में जानकारी

विषयः मनोरंजन और सूचना

कोडः मनोरंजन, दोस्त के विषय में जानकारी

कुछ कोड को विषयों में बदला जा सकता है। ऐसे कोड भी हो सकते हैं जो अस्पष्ट हों और ऐसे कोड हटाए जा सकते हैं। विषयवस्तु बनाते समय साक्षात्कारकर्ता द्वारा प्रदान की गई प्रतिक्रियाओं में पैटर्न की तलाश करें।

चरण 4विषयों की समीक्षा की जानी हैः विषयों को डेटा का प्रतिनिधित्व करने की आवश्यकता है और इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि उन पर दोबारा गौर किया जाए। इस प्रकार, हम अपने विषयों और डेटा सेट को देखेंगे और फिर उनकी तुलना करेंगे। यदि आपको लगता है कि किसी भी बदलाव की आवश्यकता है तो इसे किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए, हम महसूस कर सकते हैं कि कोडः दोस्तों के विषय में जानकारी मनोरंजन और जानकारी के बजाय पीयर रिलेशनशिप थीम के अंतर्गत जा सकती है।

चरण 5विषयों को नामित और परिभाषित किया जाना हैः यहां, हम निर्दिष्ट करेंगे कि प्रत्येक विषय से हमारा क्या मतलब है। उदाहरण के लिए, जब हम 'सोशल मीडिया के अन्य परिप्रेक्ष्य' कहते हैं, तो ये अन्य कौन हैं। क्या वे महत्वपूर्ण अन्य हैं, या दोनों आम जनता और महत्वपूर्ण अन्य हैं। सहकर्मी संबंध को उन लोगों के साथ संबंध के रूप में भी समझाया जा सकता है जिन्हें व्यक्ति समान उम्र का समझता है। मनोरंजन के साधनों के साथ–साथ सामाजिक घटनाओं के विषय में जानकारी प्रदान करने वाले सोशल मीडिया के माध्यम से मनोरंजन और सूचना की व्याख्या की जा सकती है।

चरण 6रिपोर्ट तैयार की जानी हैः विषयगत विश्लेषण की रिपोर्ट लिखते समय, निम्नलिखित को सम्मिलित करने की आवश्यकता हैः

- **परिचयः** यहां हम सोशल मीडिया के प्रति किशोरों के समग्र दृष्टिकोण के विषय में लिख सकते हैं। कितने किशोर सोशल मीडिया पसंद करते हैं और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर सक्रिय हैं। परिचय के आधार पर विषयगत विश्लेषण के उद्देश्य, प्रश्न और दृष्टिकोण की व्याख्या की जा सकती है।

- **कार्यप्रणालीः** इसमें विवरण सम्मिलित होगा कि डेटा कैसे एकत्र किया गया था। हमारे साक्षात्कार के मामले में, हमने अर्ध संरचित साक्षात्कार का उपयोग किया।
- **परिणामः** प्रत्येक विषय को इस खंड के तहत समझाया गया है। विषय का अर्थ डेटा से प्राप्त उदाहरणों की मदद से समझाया जा सकता है।
- **निष्कर्षः** यहां मुख्य निष्कर्षों पर प्रकाश डाला जा सकता है और शोध प्रश्न का उत्तर भी दिया जा सकता है।

5.0 प्रयोग 3ः नियोजित व्यवहार के सिद्धांत के आधार पर हस्तक्षेप तैयार करना

यह एक वैकल्पिक प्रयोग है और अकादमिक परामर्शदाता इस प्रयोग का चयन कर सकते हैं।

तीसरा प्रयोग तर्कपूर्ण कार्रवाई के सिद्धांत के आधार पर एक हस्तक्षेप कार्यक्रम तैयार करना है। इस प्रकार, पहले हम सिद्धांत पर विस्तार से चर्चा करेंगे और फिर इस बात पर ध्यान केंद्रित करेंगे कि हम नियोजित व्यवहार के सिद्धांत के आधार पर एक हस्तक्षेप को कैसे तैयार करेंगे।

आइए अब हम इस बारे में चर्चा करें कि नियोजित व्यवहार का सिद्धांत क्या है।

नियोजित व्यवहार के सिद्धांत को तर्कसंगत कार्रवाई के सिद्धांत के विस्तार के रूप में समझाया जा सकता है। सिद्धांत को एज़ेन द्वारा 1985 में प्रस्तुत किया गया था (साराफिनो और स्मिथ, 2011)। इस सिद्धांत का मुख्य फोकस इरादों पर है। इरादे यह दर्शाते हैं कि हम क्या करने का इरादा रखते हैं। इस प्रकार, उदाहरण के लिए, एक धूम्रपान करने वाला धूम्रपान करना बंद करने का इरादा कर सकता है, एक व्यक्ति एक निश्चित कार खरीदने का इरादा कर सकता है, इत्यादि ।

इरादे तीन निर्णयों के आधार पर निर्धारित किए जा सकते हैं।

- **व्यवहार से संबंधित अभिवृत्तिः** यह वह निर्णय है जिसके आधार पर व्यवहार करना अच्छा है या नहीं, यह तय किया जाता है। और यह आगे अपेक्षित परिणाम पर आधारित है यदि व्यक्ति एक निश्चित तरीके से व्यवहार करता है और यह परिणाम फायदेमंद होगा या नहीं। इसे किसी व्यक्ति की किसी वस्तु, व्यक्ति, घटना, संस्था या व्यवहार के अनुकूल या प्रतिकूल प्रतिक्रिया करने की प्रवृत्ति के रूप में वर्णित किया जा सकता है (शारफ, 2000)। इस प्रकार व्यवहार का मूल्यांकन व्यक्ति द्वारा सकारात्मक या नकारात्मक रूप से किया जाता है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति एक आहार योजना पर जाने का फैसला करेगा, बशर्ते उसे लगता है कि परिणाम से वजन कम होगा, जो बदले में व्यक्ति को स्वस्थ रहने या अच्छा दिखने में मदद करेगा।
- **व्यक्तिपरक मानकः** यह मुख्य रूप से सामाजिक दबाव से संबंधित है या इसे सामाजिक अपेक्षा के रूप में भी वर्णित किया जा सकता है। सामाजिक अपेक्षाओं की तुलना में सामाजिक दबाव का व्यक्ति के व्यवहार पर अधिक प्रभाव पड़ता है। व्यक्तिपरक मानदंड मुख्य रूप से इस बात पर आधारित है कि अन्य लोग व्यवहार को कैसे समझते हैं, चाहे वह उचित माना जाए या नहीं। इस प्रकार, पहले के

उदाहरण में व्यक्ति, आहार योजना के लिए जाएगा, यदि इसे उसके जीवन में महत्वपूर्ण अन्य लोगों द्वारा उचित और स्वीकार्य माना जाता है।

- **अनुभविक/कथित व्यवहार नियंत्रणः** यह एक ऐसा शब्द है जो आत्म–प्रभावकारिता के समान है और इच्छित व्यवहार को करने की सफलता के संबंध में अपेक्षाओं को दर्शाता है। यह "व्यक्तिपरक संभावना दर्शाता है कि एक व्यक्ति कार्य योजना को निष्पादित करने में सक्षम है" (शार्फ, 2000, पृष्ठ 100) को दर्शाता है। इस प्रकार, फिर से पहले उदाहरण का जिक्र करते हुए, व्यक्ति आहार योजना को अपनाएगा और उसकी सफलता के विषय में उसकी अपेक्षा के आधार पर भोजन करेगा। यह "क्या मैं यह कर पाऊंगा?" के विषय में है।

इस प्रकार, इरादे से व्यवहार में सुधार होगा। विभिन्न अध्ययनों ने इस सिद्धांत का समर्थन किया है और इस प्रकार व्यक्तिगत व्यवहार में बदलाव लाने के लिए व्यक्ति के इरादों पर ध्यान केंद्रित करने वाले हस्तक्षेप विकसित किए जा सकते हैं। इस सिद्धांत को चित्र 1 में समझाया गया है।

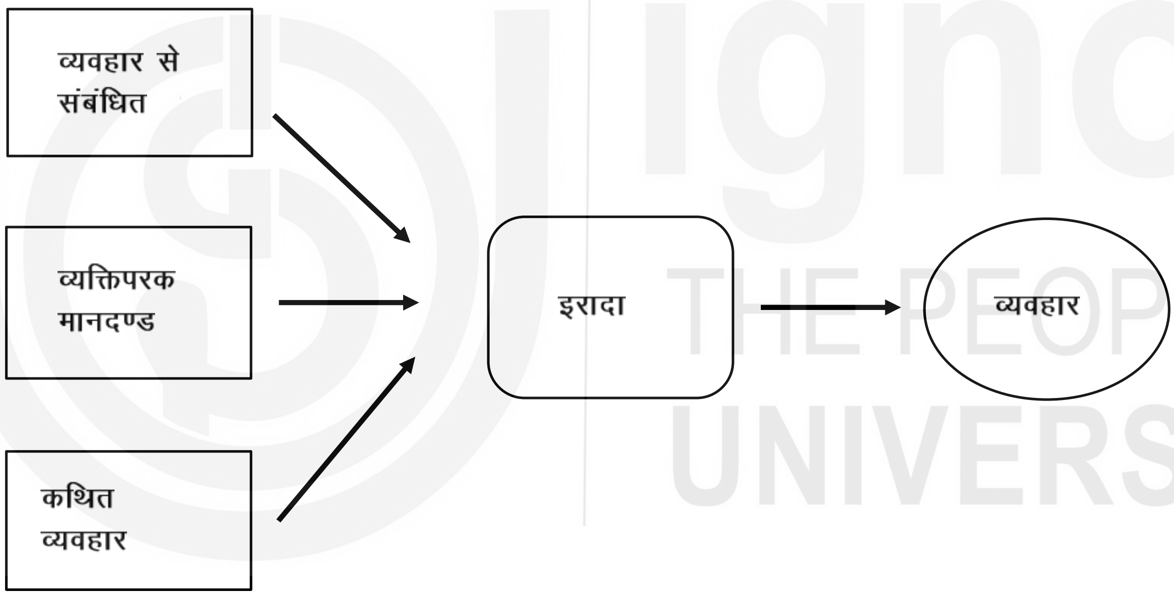

चित्र 1ः नियोजित व्यवहार का सिद्धांत

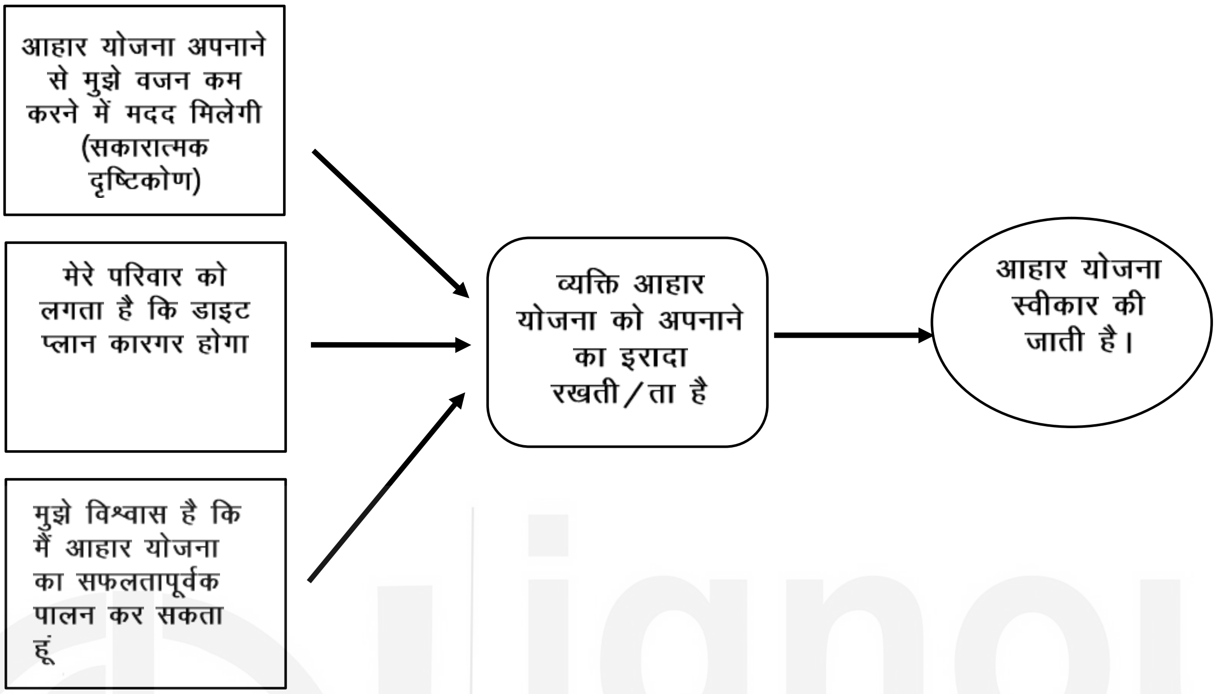

चित्र 2: नियोजित व्यवहार के सिद्धांत पर आधारित उदाहरण

इस प्रकार, तीनों, व्यवहार से संबंधित दृष्टिकोण, व्यक्तिपरक मानदंड और कथित आत्म नियंत्रण से तीव्रता बढ़ेगी, जो बदले में यह निर्धारित करेगी कि व्यवहार प्रदर्शित किया जाएगा या नहीं। उदाहरण के आधार पर आगे चर्चा करने के लिए, यदि व्यक्ति के परिवार को लगता है कि आहार योजना प्रभावी नहीं होगी और यदि व्यक्ति को भी लगता है कि वह आहार नहीं कर पाएगा, तो आहार योजना का पालन करने के लिए व्यक्ति का इरादा नहीं होगा और इस प्रकार वह आहार योजना का पालन नहीं करेंगा।

नियोजित व्यवहार के सिद्धांत की नकल में से एक यह है कि कुछ मामलों में व्यवहार इरादों पर निर्भर नहीं हो सकता है और व्यक्ति चीजों को करने की योजना बना सकते हैं लेकिन फिर भी हो सकता है उन्हें पूरा नहीं करें। लेकिन इससे निपटा जा सकता है यदि पर्याप्त योजना हो, व्यवहार की दिशा में किए गए प्रयासों को ट्रैक किया जाए, महसूस किया जाए कि उन्हें लंबे समय तक व्यवहार करने की आवश्यकता है और उन्हें विश्वास है कि वे अप अपनी योजना के अनुसार व्यवहार करने में सक्षम होंगे।

इस सिद्धांत के संदर्भ में, एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू संधि का अनुभव है, हालांकि यह सिद्धांत में पर्याप्त रूप से सम्मिलित नहीं है। इस प्रकार, यदि लोग पहले से ही कुछ व्यवहारों या समान व्यवहारों में सम्मिलित थे, तो उनके व्यवहार को अपनाने की संभावना है। उदाहरण के लिए, किसी समय, व्यक्ति ने एक समान आहार योजना का पालन किया, व्यक्ति के आहार योजना का पालन करने में सक्षम होने की संभावना अधिक है।

नियोजित व्यवहार के सिद्धांत के आधार पर हस्तक्षेप की संरचना करने की प्रक्रिया

इस प्रयोग को करते समय निम्नलिखित चरणों का पालन किया जाना चाहिए:

1) **एक सामाजिक मुद्दे का चयन करें**: खंड 2 में आपने विभिन्न सामाजिक मुद्दों का अध्ययन किया है और खंड 3 और 4 में, हमने विभिन्न क्षेत्रों में सामाजिक मनोविज्ञान के अनुप्रयोग के विषय में चर्चा की है। आप चर्चा किए गए उप–विषयों में से किसी भी मुद्दे का चयन कर सकते हैं। जिन विषयों को सम्मिलित किया जा सकता है उनमें से कुछ हैं:

   - स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार
   - पर्यावरण संबंधी व्यवहार
   - कक्षा में व्यवहार

   यह कोई भी विषय हो सकता है जो नियोजित व्यवहार के सिद्धांत में फिट बैठता है। इससे पहले कि आप सामाजिक मुद्दे को अंतिम रूप दें, यह महत्वपूर्ण है कि आप इस मुद्दे को समझें और इस मुद्दे पर किए गए साहित्य या अध्ययनों की प्रासंगिक समीक्षा देखें।

   विषय का चयन साहित्य की समीक्षा के आधार पर और अकादमिक परामर्शदाता के परामर्श से किया जाना है जिसके तहत आप प्रायोगिक कार्य करेंगे।

2) **विशिष्ट व्यवहार का चयन करें जिसे आप लक्षित करने का प्रस्ताव करते हैं**: उदाहरण के लिए, यह शारीरिक फिटनेस को बढ़ावा देना, अपशिष्ट प्रबंधन से संबंधित जागरूकता, कुछ सीखने की रणनीति को अपनाना आदि हो सकता है। यह भी अकादमिक परामर्शदाता के साथ चर्चा के आधार पर किया जाना चाहिए।

3) **समूह का चयन**: उन लोगों के समूह का चयन करें जिनके लिए हस्तक्षेप का प्रयोजन किया है। आपके द्वारा चुने गए मुद्दे के आधार पर आयु, लिंग, क्षेत्र, सामाजिक–आर्थिक स्थिति आदि सहित उनका जनसांख्यिकीय विवरण प्रदान करें। उदाहरण के लिए, हस्तक्षेप के लिए लक्षित समूह किशोरों के लिए या कर्मचारियों के लिए या बड़े वयस्कों के लिए हो सकता है और इसी तरह।

4) **हस्तक्षेप की रूपरेखा तैयार करना**: इसमें नियोजित व्यवहार के सिद्धांत के आधार पर, आप एक हस्तक्षेप की रूपरेखा तैयार करेंगे। आप सिद्धांत के प्रत्येक पहलू पर ध्यान केंद्रित करेंगे, इस तरह आप व्यवहार, व्यक्तिपरक मानदंडों और कथित नियंत्रण से संबंधित दृष्टिकोण से निपटेंगे।

आपने स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों को देखा होगा जो इन पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। उदाहरण के लिए, कोविड–19 संबंधित जागरूकता कार्यक्रम हैं जो मास्क और सुरक्षित व्यवहार जैसे सुरक्षा उपकरणों के उपयोग को बढ़ावा देते हैं, जैसे अक्सर हाथ धोना, सैनिटाइज़र का उपयोग आदि। इस तरह के जागरूकता कार्यक्रम मुख्य रूप से उपकरणों के उपयोग और एहतियाती व्यवहार के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने पर केंद्रित हैं।

आपने जागरूकता कार्यक्रम भी देखे होंगे जहां एक बच्चा अपने पिता को ट्रैफिक सिग्नल पर प्रतीक्षा करते समय मोटरबाइक या कार के इंजन को बंद करने के लिए कहता है। यह व्यक्तिपरक मानदंडों को पूरा करता है।

ऐसे जागरूकता कार्यक्रम भी हैं जो इस बात पर जोर देते हैं कि इस मुद्दे से कैसे निपटा जा सकता है और हम इसे कैसे जीतेंगे। इस तरह के जागरूकता कार्यक्रम कथित नियंत्रण पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

जब आप एक हस्तक्षेप कार्यक्रम तैयार करते हैं, तो आपको सभी तीन घटकों पर ध्यान केंद्रित करना होगा और आपके हस्तक्षेप को न केवल उस आंकड़े के संदर्भ में

समझाया जाना चाहिए जो हमने चित्र 2 में प्रदान किया है, बल्कि यह भी निर्दिष्ट करने की आवश्यकता है कि प्रत्येक घटक में कौन से उपाय सम्मिलित किए जाएंगे। जैसा कि, व्यवहार से संबंधित अभिवृत्ति, व्यक्तिपरक मानदंड और कथित व्यवहार नियंत्रण। इस प्रकार आपका हस्तक्षेप इन तीन घटकों का संयोजन होगा।

6.0 प्रायोगिक नोटबुक के लिए प्रारूप

प्रायोगिक नोटबुक में एक **शीर्षक पृष्ठ** होगा जैसा कि **परिशिष्ट 1** में दिया गया है और उसके बाद प्रमाणपत्र होगा, जैसा कि **परिशिष्ट 2** में दिया गया है।

6.1 मनोवैज्ञानिक परीक्षण लिखने का प्रारूप

आपको इस प्रारूप के विषय में अच्छी तरह से पता होना चाहिए, लेकिन आपके लिए तैयार संदर्भ के लिए, इसे निम्नानुसार दिया गया हैः

प्रायोगिक नोटबुक तैयार करते समय निम्नलिखित प्रारूप का पालन किया जा सकता है।

- **शीर्षकः** इस शीर्षक के अंतर्गत प्रायोगिक अभ्यास के 'शीर्षक' या 'नाम' का उल्लेख होगा, उदाहरण के लिए, प्रयोग 1ः वोकेशनल इंटरेस्ट इन्वेंटरी।
- **उद्देश्य/लक्ष्यः** इसमें मूल रूप से व्यावहारिक अभ्यास के मुख्य लक्ष्य या उद्देश्य सम्मिलित हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप 'वोकेशनल इंटरेस्ट इन्वेंटरी' पर परीक्षण कर रहे हैं तो परीक्षण का मूल उद्देश्य होगाःवोकेशनल इंटरेस्ट इन्वेंटरी का उपयोग कर प्रतिभागी की अभिरुचि का आकलन करना'।
- **परिचय (लगभग 4 से 5 पृष्ठ)** : इस खंड के तहत, अवधारणा के मापन और परीक्षण के विषय में जानकारी का उल्लेख किया गया है। उदाहरण के लिए, वोकेशनल इंटरेस्ट इन्वेंटरी के मामले में, आपको उस अवधारणा के विषय में बताने की आवश्यकता है जो है अभिरुचि और यह परीक्षण के विषय में विवरण भी प्रदान करता है। वर्तमान अभ्यास में प्रायोगिक अभ्यास के लिए निर्दिष्ट विषय अभिरुचि/अभिक्षमता/अभिवृत्ति हैं। इस प्रकार, चयनित प्रयोग विषय के आधार पर, आवश्यक परिचय प्रदान करने की आवश्यकता है। वर्तमान खंड में, हमने खंड 6.0, 7.0 और 8.0 के प्रत्येक विषय के विषय में संक्षेप में चर्चा की है, आपको अधिक संदर्भ पुस्तकों का उल्लेख करना होगा और इन अवधारणाओं के विषय में अधिक जानकारी जोड़ना होगी और साथ ही प्रायोगिक अभ्यास नोटबुक के अपने परिचय अनुभाग में उस परीक्षण के विषय में भी बताना होगा जिसे अकादमिक परामर्शदाता द्वारा चुना गया है। इससे आपको सत्र अंत परीक्षा (टी ई ई) के दौरान मौखिक परीक्षा की तैयारी करने में भी मदद मिलेगी।
- **परीक्षण का विवरणः** इसके तहत, परीक्षण के संबंध में विवरण का उल्लेख किया जाता है, जैसे परीक्षण के लेखक, परीक्षण का मूल उद्देश्य, वस्तुओं की संख्या, आयाम / कारक जो परीक्षण में सम्मिलित हैं, समय सीमा, विश्वसनीयता, वैधता, स्कोरिंग।
- **आवश्यक सामग्रीः** परीक्षण के प्रबंधन के लिए आवश्यक सामग्री का उल्लेख किया गया है। उदाहरण के लिए, वोकेशनल इंटरेस्ट इन्वेंटरी के मामले में,

परीक्षण बुकलेट, उत्तर पुस्तिका, स्कोरिंग कुंजी, पेंसिल, रबड़ की आवश्यकता होती है।

- **प्रयोज्य (प्रतिभागी) की प्रोफ़ाइलः** इसमें प्रतिभागी के विषय में सभी विस्तृत जानकारी सम्मिलित होगी, जैसे, प्रतिभागी का नाम (वैकल्पिक), आयु, लिंग, शैक्षिक अभिक्षमता और व्यवसाय। गोपनीयता सुनिश्चित करने के लिए आपको प्रतिभागी के नाम का उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है। इसके बजाय आप एक कोड का उपयोग कर सकते हैं।
- **प्रक्रिया और प्रबंधनः** यहां सम्मिलित उप–शीर्षक निम्नलिखित हैं
  - तैयारीः परीक्षण के संचालन के लिए आवश्यक सामग्री, जैसे, परीक्षण बुकलेट, उत्तर पुस्तिका, स्टॉपवॉच आदि को तैयार रखा जाता है।
  - घनिष्ठताः आपको यह उल्लेख करना होगा कि प्रतिभागी के साथ तालमेल बनाया गया था और परीक्षण के विवरण के विषय में उसे अच्छी जानकारी थी।
  - नैतिक मुद्देः नैतिक मुद्दों को ध्यान में रखें और तदनुसार प्रतिभागी को उपयुक्त जानकारी प्रदान करें। प्रतिभागी के अधिकारों और सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए इस दिशा में आवश्यक कदम उठाएं।आवश्यकता पड़ने पर डीब्रीफिंग/पूछताछ की जाए।
  - निर्देशः परीक्षण के मैनुअल में दिए गए निर्देशों को यहाँ सम्मिलित किया जाना है।
  - सावधानियांः इस उप शीर्षक के तहत परीक्षण के प्रबंधन के दौरान ली गई सावधानियों, यदि कोई हो, का उल्लेख पर किया जाना है ।
  - अंतर्निरीक्षण रिपोर्टः प्रतिभागी द्वारा परीक्षण पूरा करने के बाद, एक अंतर्निरीक्षण रिपोर्ट ली जानी है, अर्थात, परीक्षा से गुजरने के दौरान प्रतिभागी के द्वारा सामना की गई उसकी भावनाओं और बाधाओं का इस उप शीर्षक के तहत उल्लेख किया जाता है।
- **स्कोरिंग और व्याख्याः**प्रतिभागी द्वारा परीक्षण पूरा करने के बाद, उत्तर पुस्तिका को स्कोरिंग कुंजी की मदद से बनाया जाना है और डेटा की मैनुअल में दिए गए मानदंडों की मदद से व्याख्या की जानी है। इस शीर्षक के तहत अंकों का उल्लेख और व्याख्या की जा सकती है।
- **चर्चाः** आपको व्याख्या के आधार पर परिणाम पर चर्चा करनी होगी। इसका अंतर्निरीक्षण रिपोर्ट की सहायता से विश्लेषण किया जा सकता है ।
- **निष्कर्षः** इस शीर्षक के तहत, आपको परीक्षण / प्रयोग के परिणामों का निष्कर्ष निकालना होगा।
- **संदर्भः**शिक्षार्थियों द्वारा संदर्भित पुस्तकों, वेबसाइटों और मैनुअल अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन (एपीए) प्रारूप में उल्लेखित करनी चाहिए हैं।

संदर्भः संदर्भ एपीए (APA)प्रारूप में होने चाहिए।

6.2 गहन साक्षात्कार की अभिलेखन के लिए प्रारूप

प्रायोगिक नोटबुक तैयार करते समय निम्नलिखित प्रारूप का पालन किया जा सकता है।

- **शीर्षकः** इस शीर्षक में प्रयोग के 'शीर्षक' या 'नाम' का उल्लेख होगा, उदाहरण के लिए, प्रयोग 2: किशोरों द्वारा सोशल मीडिया के उपयोग पर साक्षात्कार
- **लक्ष्य/उद्देश्यः** इसमें मूल रूप से प्रयोग के मुख्य उद्देश्य या उद्देश्य सम्मिलित होंगे। उदाहरण के लिए, किशोरों में सोशल मीडिया के उपयोग का अध्ययन करना।
- **परिचय (चार से पांच पृष्ठ):** इस खंड के तहत साक्षात्कार के मुख्य फोकस के विषय में जानकारी का उल्लेख किया जाना है। तो आप किशोरों के बीच सोशल मीडिया के उपयोग के विषय में लिख सकते हैं। अपने प्रायोगिक 2 के परिचय खंड में, आपको संदर्भ पुस्तकों का संदर्भ लेना होगा और विषय के विषय में और शैक्षिक परामर्शदाता द्वारा चुने गए परीक्षण के विषय में भी अधिक जानकारी जोड़नी होगी। यह आपको सत्रांत परीक्षा (टर्म एंड एग्जामिनेशन) (टीईई) के दौरान मौखिक परीक्षा की तैयारी में भी मदद करेगा।
- **साक्षात्कार का विवरणः** इस खंड के तहत आपको साक्षात्कार के प्रकार का विवरण सम्मिलित करना होगा जिसका आपने उपयोग किया था। साथ ही आपके द्वारा पूछे गए सभी प्रश्नों को सूचीबद्ध करें।
- **प्रतिभागी का प्रोफाइलः** इसमें प्रतिभागी के विषय में सभी विस्तृत जानकारी सम्मिलित होगी, जैसे, प्रतिभागी का नाम (वैकल्पिक), आयु, लिंग, शैक्षिक योग्यता और व्यवसाय। गोपनीयता सुनिश्चित करने के लिए आपको प्रतिभागी के नाम का उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है। इसके बजाय आप एक कोड का उपयोग कर सकते हैं।
- **साक्षात्कार आयोजित करने की प्रक्रियाः** निम्नलिखित उपशीर्षक यहां सम्मिलित हैं:
  - **तैयारीः** साक्षात्कार के संचालन के लिए आवश्यक सामग्री, जैसे, प्रश्न, उत्तर को नोट करने के लिए शीट, रिकॉर्डर, कैमरा आदि।
  - **तालमेलः** आपको यह उल्लेख करना होगा कि प्रतिभागी के साथ संबंध बनाए गए थे और उसे साक्षात्कार के विवरण के विषय में अच्छी तरह से सूचित किया गया था।
  - **नैतिक मुद्देः** नैतिक मुद्दों को ध्यान में रखें और तदनुसार प्रतिभागी को उपयुक्त जानकारी प्रदान करें। प्रतिभागी के अधिकारों और सुरक्षा को सुरक्षित करने के लिए इस दिशा में आवश्यक कदम उठाएं। यदि आवश्यक हो तो डीब्रीफिंग की जाती है।
- **तीनों साक्षात्कारों के शब्दशः** और अवलोकनः तीनों साक्षात्कारों के शब्दशः और अवलोकन प्रदान करें।

  विषयगत विश्लेषणः जैसा कि पहले खंड में चर्चा की गई थी, विषयगत विश्लेषण किए जाने की आवश्यकता है। यहां परिचय और कार्यप्रणाली का संक्षेप

में उल्लेख किया जा सकता है क्योंकि इसे आपने साक्षात्कार के परिचय और विवरण में सम्मिलित किया था। मुख्य फोकस परिणामों पर हो सकता है।

- **निष्कर्षः** इस शीर्षक के तहत, आपको साक्षात्कार के निष्कर्षों को समाप्त करना होगा।
- **संदर्भः** संदर्भ एपीए प्रारूप में होने चाहिए

6.3 नियोजित व्यवहार के सिद्धांत पर आधारित हस्तक्षेप काअभिलेखन करने का प्रारूप

याद रखें कि आपको केवल एक हस्तक्षेप की रूपरेखा तैयार करने और योजना बनाने की जरूरत है, न कि वास्तव में इसे लागू करने की।

प्रायोगिक नोटबुक तैयार करते समय निम्नलिखित प्रारूप का पालन किया जा सकता है।

- **शीर्षकः** इस शीर्षक में प्रयोग के 'शीर्षक' या 'नाम' का उल्लेख होगा, उदाहरण के लिए, प्रयोग 3ः एक विनिर्माण उद्योग में श्रमिकों के बीच सुरक्षा उपकरणों के उपयोग के लिए हस्तक्षेप।
- **उद्देश्यः** इसमें मूल रूप से प्रयोग के मुख्य उद्देश्य या उद्देश्य सम्मिलित होंगे। आप इस उद्देश्य का उल्लेख करेंगे "एक विनिर्माण उद्योग में श्रमिकों के बीच सुरक्षा उपकरणों के उपयोग के लिए एक हस्तक्षेप रणनीति विकसित करना"।
- **परिचय (चार से पांच पृष्ठ) :** इस खंड के तहत, आपको नियोजित व्यवहार के सिद्धांत के साथ–साथ अपने हस्तक्षेप के फोकस के विषय में कुछ जानकारी प्रदान करने की आवश्यकता है। हमारे उदाहरण के मामले में, औद्योगिक निर्माण की जानकारी के साथ–साथ सुरक्षा उपकरणों (जैसे सुरक्षा मास्क, दस्ताने, ईयर प्लग आदि) की आवश्यकता और महत्व को सम्मिलित किया जा सकता है। इस संदर्भ में साहित्य की कुछ समीक्षा भी सम्मिलित करें, यह आपके द्वारा उठाए गए मुद्दों के साथ–साथ आपके द्वारा चुने गए मुद्दों के संबंध में नियोजित व्यवहार के सिद्धांत के अनुप्रयोग पर अध्ययन भी हो सकता है। यह आपको टर्म एंड एग्जामिनेशन (टीईई) के दौरान मौखिक परीक्षा की तैयारी में भी मदद करेगा।
- **समूह की रूपरेखा जिसके लिए हस्तक्षेप तैयार किया गया हैः** इसमें उस समूह की प्रकृति, जिसके लिए आप हस्तक्षेप की रूपरेखा तैयार कर रहे हैं, उनकी आयु सीमा, स्थिति, समूह की विशेषताओं के विषय में कोई अन्य प्रासंगिक जानकारी सम्मिलित होगी। उन प्रतिभागियों की संख्या का भी उल्लेख करें जिनके लिए हस्तक्षेप तैयार किया गया है।
- **आंकड़े के साथ हस्तक्षेप का वास्तविक डिजाइनः** यह खंड आपके प्रयोग 3 की रिपोर्टिंग में सबसे महत्वपूर्ण होगा। यहां आप इस बारे में जानकारी प्रदान करेंगे कि नियोजित व्यवहार के सिद्धांत के तहत चर्चा किए गए प्रत्येक घटक पर कैसे ध्यान केंद्रित किया जाएगा। सिद्धांत पर फिर से विचार करने के लिए, आपके हस्तक्षेप का मुख्य फोकस व्यवहार परिवर्तन पर होगा। हमारे उदाहरण के मामले में, यह श्रमिकों द्वारा सुरक्षा उपकरणों का उपयोग है। इस प्रकार, सुरक्षा उपकरण का उपयोग करने के लिए श्रमिकों के बीच इरादे को जगाकर हस्तक्षेप को विकसित करने की आवश्यकता है। श्रमिकों को सुरक्षा उपकरणों का उपयोग

करने के इरादे की आवश्यकता है और इसके लिए हमें व्यवहार, व्यक्तिपरक मानदंडों और कथित नियंत्रण के प्रति दृष्टिकोण पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

इस प्रकार, किन गतिविधियों को किया जाएगा, कैसे, अवधि आदि के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिएसुरक्षा उपकरणों का उपयोग। हमारे उदाहरण के मामले में, जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करके, सुरक्षा उपकरणों के उपयोग के महत्व के विषय में पोस्टर लगाकर व्यवहार के प्रति दृष्टिकोण को पूरा किया जा सकता है। आपको इस बात का ब्योरा देना होगा कि आप जागरूकता कार्यक्रम की योजना कैसे बनाएंगे, यदि आप इसे सम्मिलित करते हैं, उदाहरण के लिए, क्या यह कार्यशाला प्रारूप में होगा (अवधि और विषयों को कवर किया जाएगा, क्या इसे बैचों में किया जाएगा) .

आगे आपको यह उल्लेख करना होगा कि आप व्यक्तिपरक मानदंडों पर कैसे ध्यान केंद्रित करेंगे। हमारे उदाहरण के मामले में, प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण व्यक्ति सुरक्षा उपकरण के महत्व पर श्रमिकों को संबोधित कर सकता है या श्रमिकों के परिवारों को सम्मिलित किया जा सकता है और कार्यस्थल पर सुरक्षा उपकरणों का उपयोग करने के लिए श्रमिकों को प्रोत्साहित करने में भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। यह कर्मियों या मानव संसाधन विभाग की मदद से किया जा सकता है।

अंत में कथित व्यवहार नियंत्रण उपायों से निपटने के लिए उपाय किए जा सकते हैं। हमारे द्वारा लिए गए उदाहरण के मामले में, कर्मचारियों को सबसे पहले सुरक्षा उपकरणों का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षण दिया जा सकता है और कार्यस्थल पर सुरक्षा उपकरणों के उपयोग के संबंध में उनमें विश्वास पैदा करने के उपाय किए जा सकते हैं।

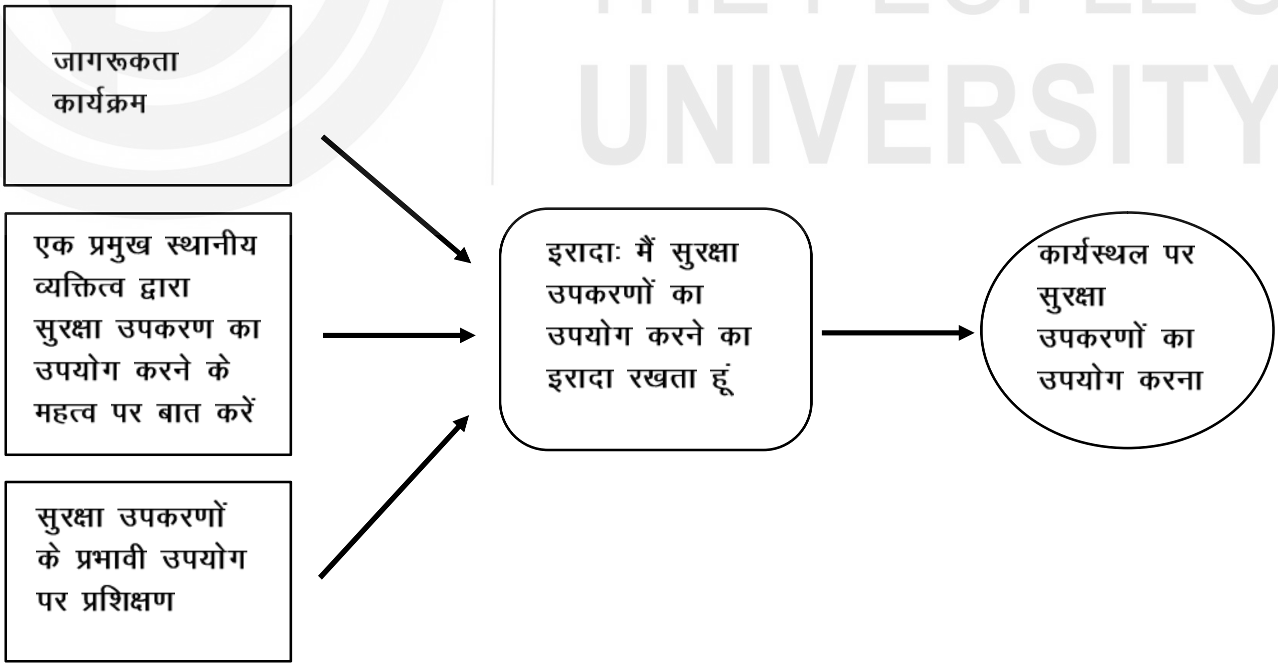

चित्र 3: नियोजित व्यवहार के सिद्धांत पर आधारित गतिविधियों का उदाहरण

- **निष्कर्षः** इस शीर्षक के तहत, आपको एक समापन वक्तव्य देना होगा।
- **संदर्भः** संदर्भ एपीए प्रारूप में होने चाहिए।

6.4 संदर्भ के लिए प्रारूप

शिक्षार्थी द्वारा संदर्भित पुस्तकों, वेबसाइटों और मैनुअल का उल्लेख अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन (एपीए) प्रारूप में किया गया है।

संदर्भ (एपीए स्टाइल)

संदर्भ एपीए प्रारूप में लिखे जाने हैं। इन्हें वर्णानुक्रम में सूचीबद्ध किया जाना चाहिए।

पुस्तकें

अनास्तासी, ए. (1968). साइकोलॉजिकल टेस्टिंग. लंदनः मैकमिलन कंपनी. पत्रिका लेख

डेनिशन, बी. (1984).ब्रिंगिंग कॉरपोरेट कल्चर टू द बॉटम लाइन. ऑर्गेनाइजेशनल डायनेमिकस, 13 , 22 –24।

पुस्तक अध्याय

खान, एडब्ल्यू. (2005). डिस्टेंस एजुकेशन फॉर डेवलपमेंट.इनः गर्ग. एस.अट.ऑल. (ईडीएस) ओपन एंड डिस्टेंस एजुकेशन इन ग्लोबल एनवायरनमेंट : अपॉर्चुनिटीज़ फॉर कोलैबोरेशन. नई दिल्लीः वायवा बुक्स।

वेबसाइट

http://www.mcb.co.uk/apmfirum (2.3.2011 को एक्सेस किया गया)

ध्यान दें:

- प्रयोग **हस्तलिखित** होने चाहिए और उन्हें ए 4 आकार के कागज पर रेखांकित कर और सफाई से दर्ज किया जा सकता है।
- सुनिश्चित करें कि किसी भी तालिका, आरेख, आँकड़े को आप किसी खाली पृष्ठ पर खींचे। इन्हें पेंसिल से खींचना और उचित रूप से लेबल किया जाना है।
- प्रयोज्य द्वारा भरी गई परीक्षण की मूल उत्तर पुस्तिका को संलग्न करें।
- अपने प्रायोगिक नोटबुक में सभी पृष्ठों संख्या को अंकित करें।
- **प्रयोग की किसी भी स्रोत से नक़ल न उतारें** और उन्हें अपने शब्दों में लिखें और जहां भी आवश्यक हो संदर्भों को उद्धृत करें।
- **अध्ययन केंद्र में जमा करने से पहले कृपया प्रैक्टिकल नोटबुक की एक फोटोकॉपी रखें। नोटबुक जमा करते समय अभिस्वीकृति (परिशिष्ट-III) भी ली जा सकती है।**
- **प्रयोग (महामारी जैसी स्थितियों को देखते हुए) किसी भी अपडेट के लिए इग्नू और अपनी क्षेत्रीय वेबसाइटों को देखें। यदि महामारी की स्थिति के कारण, मनोविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली द्वारा ऑनलाइन प्रयोग अनुमति दी जाती है, तो शिक्षार्थी प्रयोग 2 और 3 को कर सकते हैं और प्रायोगिक नोटबुक में इसको रिपोर्ट कर सकते हैं।**

7.0 मूल्यांकन

प्रायोगिक घटक (2 क्रेडिट) के **मूल्यांकन** में आंतरिक और बाह्य मूल्यांकन दोनों सम्मिलित हैं। प्रायोगिक घटक के लिए कुल अंक 100 है (आंतरिक मूल्यांकन 50 अंक है और बाहरी मूल्यांकन 50 अंक है)। हालांकि, आंतरिक मूल्यांकन के लिए वेटेज 70 प्रतिशत है, जबकि बाहरी मूल्यांकन में 30प्रतिशत वेटेज है। अंकों का वितरण इस प्रकार है:

आंतरिक	**अंक**	**बाह्य**	**अंक**
उपस्थिति	5	संचालन	20
परीक्षण एवं गहन साक्षात्कार/ नियोजित व्यवहार के सिद्धांत के आधार पर तैयार हस्तक्षेप का संचालन	30	उत्तर पत्रिका का मूल्यांकन	10
प्रायोगिक नोटबुक	15	मौखिक परीक्षा	20
कुल अंक	50	कुल अंक	50

प्रायोगिक अभ्यास की कक्षाओं के पूरा होने के बाद अकादमिक परामर्शदाता द्वारा आंतरिक मूल्यांकन किया जाता है , जबकि बाहरी मूल्यांकन बाहरी परीक्षक द्वारा सत्रांत परीक्षा के दौरान किया जाता है। आंतरिक मूल्यांकन से तात्पर्य है अध्ययन केंद्र में कक्षा में प्रायोगिक के वास्तविक संचालन और उन्हें निर्धारित प्रारूप में प्रैक्टिकल नोटबुक में रिपोर्ट करना। फिर आप प्रैक्टिकल नोटबुक को अकादमिक परामर्शदाता के पास जमा करेंगे और प्रायोगिक सत्र अंत परीक्षा से पहले इसकी जांच करवा लेंगे । प्रायोगिककक्षाओं में भाग लेने के लिए भी अंक हैं।

बाहरी मूल्यांकन का तात्पर्य परीक्षा (टीईई) के दिन परीक्षण के संचालन /प्रबंधन से है और परीक्षण के संचालन के आधार पर मौखिक परीक्षा के लिए उपस्थित होना है।

प्रायोगिक के लिए सत्रांत परीक्षा/टर्म एंड एग्जामिनेशन (टी ई ई) का आयोजन स्टडी सेंटर में किया जाएगा। व्यावहारिक घटक के टीईई के लिए आपको अलग से परीक्षा शुल्क जमा करना होगा। परीक्षा शुल्क रु 150 है (यह संशोधन के अधीन है) |www.ignou.ac.in से लागू नवीनतम शुल्क राशि की जाँच करें

आप परीक्षा के समय प्रायोगिक नोटबुक लाएंगे। परीक्षा की अवधि 3 घंटे की होगी। परीक्षा के दौरान, आप सीखी गई परीक्षण का संचालन करेंगे। आप परीक्षण सामग्री एकत्र करेंगे और प्रयोग (प्रैक्टिकल) का संचालन करना शुरू करेंगे। आपको परीक्षा के दिन एक प्रयोज्य को लाने की आवश्यकता है, जिस पर परीक्षण आयोजित की जाएगी। एक बार जब आप प्रैक्टिकल का संचालन समाप्त कर लें, तो उत्तर पुस्तिका में निष्कर्ष लिखें। इसके बाद मौखिक परीक्षा होगी। प्रायोगिक समाप्त होने के बाद प्रतिभागी जा सकता है।

प्रायोगिक के टीईई का उत्तर देते समय निम्नलिखित बातें याद रखें :

- आपको एक उत्तर पुस्तिका मिलेगी, जिसमें आपको नामांकन संख्या, पाठ्यक्रम कोड इत्यादि जैसे विवरण भरने होंगे। सुनिश्चित करें कि आप सही ढंग से विवरण भरें।

प्रायोगिक नोटबुक जमा करते समय पावती (परिशिष्ट III) लेना याद रखें। साथ ही प्रायोगिक नोटबुक की एक फोटोकॉपी अपने पास रखें।

- उस परीक्षण के नाम के साथ–साथ उसके लक्षण और उद्देश्यों के विषय में लिखें जिसे आप आयोजित कर रहे हैं। इसके अलावा, आपको परीक्षण के विवरण, आवश्यक सामग्री, प्रयोज्यों (प्रतिभागियों) की प्रोफ़ाइल, प्रक्रिया और प्रबंधन, स्कोरिंग पर आधारित निष्कर्ष और इसकी व्याख्या, चर्चा और निष्कर्ष (जैसा की हमने प्रायोगिक नोटबुक लिखने के प्रारूप के तहत चर्चा की है) के विषय में भी बताना होगा।

बाहरी परीक्षक द्वारा प्रायोगिक उत्तर पुस्तिका की जांच की जाएगी और बाहरी परीक्षक द्वारा मौखिक परीक्षा भी संचालित की जाएगा।

परीक्षक प्रयोग 1 के साथ–साथ प्रयोग 2/3 (आपके द्वारा किया गया और प्रायोगिक नोटबुक में लिखा गया) के विषय में प्रश्न पूछ सकते हैं।

प्रायोगिक घटक में न्यूनतम उत्तीर्ण अंक 100 में से 35 है। प्रैक्टिकल (प्रायोगिक परीक्षा) के टीईई में कोई पुनर्मूल्यांकन नहीं है।

बीपीसीसी 110 में प्रैक्टिकल की सत्रांत परीक्षा की तिथि सीमा

टी ई ई	तिथि सीमा
जून	1 जुलाई से 14 अगस्त
दिसंबर	1 जनवरी से 15 फरवरी

नोटःबीपीसीसी 110 के प्रैक्टिकल की सत्रांत परीक्षा की तिथियां एसईडी, इग्नू द्वारा प्रदान की गई डेट शीट में नहीं दिखाई देंगी। इसके लिए कृपया अपने संबंधित अध्ययन केंद्रों से संपर्क करें।

8.0 संदर्भ

Anastasi, A. Psychological Testing. (1969) New York: Macmillan

Anastasi, A. and Urbina, S. (1997). Psychological testing (7th ed.). Upper Saddle River, NJ: Prentice-Hall. ———. (2003). Psychological testing. Delhi: Pearson Education Pvt. Ltd.

Banister, P., Burman, E., Parker, I., Taylor, M. & Tindall, C. (1994) Qualitative Methods in Psychology: A Research Guide. Buckingham-Philadelphia: Open University Press.

Bedford, T. (1982) Vocational Guidance Interviews: A Survey by Careers Service Inspectorate, London: Careers Service Branch, Department of Employment.

Binet, A and Simon, T. (1960). The Development of Intelligence in Children, Vineland, N.J.: T.S. publication.

Bordens, K. S and Abbott, B. B. (2011). Research Designs and Methods: A Process Approach. New Delh: McGraw Hill Education (India) Private Limited.

Burns, Robert B. (2000). Introduction to Research Methods. New Delhi: Sage publication Ltd.

D'Amato, M.R. Experimental Psychology: Methodology Psychophysics and Learning. New Delhi: Tata Mcgraw Hill (1985).

Eagly, A. H., & Chaiken, S. (1993*). The psychology of attitudes*. Fort Worth, TX: Harcourt Brace Jovanovich.

Freeman, Frank S. (1965) Theory and Practice of Psychological Testing. 3rd Edition. New Delhi: Oxford & IBH Publishing Co. Pvt. Ltd.

Fernald, L.D. & Fernald, P.S. Munn's Introduction to Psychology. Delhi: AITBS Publishers and Distributors (2007).

Gregory, RJ (2004). Psychological Testing: History, Principals and Applications. Pearson Hilgard & Atkinson (2003) Introduction to Psychology.14th Edition. Thomson Wadsworth

Goodwin, C. J. (2003). Research in Psychology: Methods and Designs. Hoboken, New Jersey: Wiley.

Haynes, S. N., Nelson, K., & Blaine, D. D. (1999). Psychometric issues in assessment research. In

P. C. Kendall, J. N. Butcher, & G. N. Holmbeck (Eds.), Handbook of research methods in clinical psychology (2nd ed., pp. 125–154). New York: Wiley.
Jackson, S.L. (2009). Research Methods and Statistics: A Critical Thinking Approach 3rd edition. Belmont, CA: Wadsworth.

Kaplan, R. M. and Saccuzzo, D. P. (2013). Psychological testing: Principles, applications and issues. Belmont CA: Wadsworth/ Thomson Learning.

Kazdin, A. E. (1998). Research design in clinical psychology (3rd ed.). Boston: Allyn & Bacon.

Kerlinger, Fred, N. (1995). Foundations of Behavioural Research. Bangalore: Prism Books Pvt. Ltd. for information on research, research designs, types of research and methods of data collection.

Larsen, R.R., and Buss, D.M. (2018). Personality Psychology: Domains of Knowledge About Human Nature.

Majumdar, P.K. research Methods in Social Science. New delhi: Viva Books.

Mcbride, B. M. (2010). The Process of Research in Psychology. Sage Publications: USA Wilson-

Murphy, K. R. and Davidshofer, C. O. (1998). Psychological testing: Principles and applications. Englewood Cliffs, NJ: Prentice-Hall.

Parameshwaran, E.G. & Ravichandra, K. Experimental Psychology.A Laboratory Manual.Seema Publications, Delhi (1983).

Personality retrieved from https://www.apa.org/topics/personality/on 28/09/2019 at 11:00 am

Postman, L. & Egan, J.P. Experimental Psychology: An Introduction. Indian Edn., Ludhiana, Kalyani Publishers (1982).

Rajamanickam, M. (2005) Experimental Psychology, Vol.I & II. New Delhi: Concept Publishing Company.

Rao, S. Narayan (1999) Educational Psychology. New Delhi: New Age International (P) Ltd. Reber, A S & Reber, E. (2001). The Penguin Dictionary of Psychology, 3rd Edition. London: Penguin Books.

Rich, B. A., & Eyberg, S. M. (2001). Accuracy of assessment: The discriminative and predictive power of the Eyberg Child Behavior Inventory. *Ambulatory Child Health, 7,* 249–257. Ruane, J. M. (2016). Introducing Social Research Methods: Essentials for Getting the Edge. United Kingdoms: John Wiley and Sons Ltd.

Sarafino, E. P and Smith, T. W. (2011). Health Psychology: Biopsychosocial Interactions. USA: John Wiley & Sons, INC.

Sears, D. O., Peplau, A. L., & Taylor, S. E. (1991). *Social psychology*. Englewood Cliffs, New Jersey: Prentice Hall.

Sharf R. S. (2000). Theories of Psychotherapy and Counselling, (2nd edition). University of Delaware: Brooks/Cole, Thomson Learning: U.S.A.

Shetgovekar, S.. (2018). An Introduction to Social Psychology. Delhi: Sage.

Veeraraghavan, V and Shetgovekar, S. (2016). Textbook of Parametric and Nonparametric Statistics. Delhi: Sage.

Venkatraman, D. (1994). Style of Learning & Thinking: Administrator's Manual. New Delhi: PSY-COM Services.

Wechsler, D. (1944). The measurement of adult intelligence (3rd ed.). Baltimore: Williams & Wilkins.

Zoltor, A. J., & Mayer, J. (2004). Does a short symptom checklist accurately diagnose ADHD? *Journal of Family Practice.*Retrieved February 14, 2005, from http://www.findarticles.com/p/articles/ mi_m0689-is_5_53_ai_n6031048.

9.0 अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

1. प्रायोगिक घटक कितने क्रेडिट का है?

   उः दो क्रेडिट।

2. क्या यह घटक अनिवार्य है?

   उः हाँ।

3. प्रायोगिक के कितने सत्र होंगे और इसे कहां पर किया जाएगा?

   उः प्रायोगिक के लिए दो सत्र होगा और वह आपके अध्ययन केंद्र पर आपके अकादमिक परामर्शदाता के द्वारा किया जाएगा।

4. क्या प्रायोगिक के लिए उपस्थिति अनिवार्य / बाध्यकर है ?

   उः हाँ और मूल्यांकन के घटकों में से एक है उपस्थिति।

5. क्या मुझे तीनों प्रयोग करने हैं?

   नहीं, प्रयोग नंबर 1 अनिवार्य है और एक अन्य प्रयोग का चयन आपके अकादमिक परामर्शदाता द्वारा किया जाएगा।

6. प्रायोगिक नोटबुक कैसे लिखें?

   उ. इस पाठ्यक्रम के खंड 5 में प्रारूप दिया गया है।

7. प्रायोगिक नोटबुक का मूल्यांकन कौन करेगा?

   उः प्रायोगिक सत्र आयोजित करने वाले अकादमिक परामर्शदाता।

8. क्या मुझे कोई टीईई फीस देने की आवश्यकता है?

   उः हां रु 150 / –(पुनरीक्षण के आधीन) का भुगतान किया जाना है।

9. क्या मुझे टीईई के लिए प्रयोज्य लाने की आवश्यकता है?

   उः हाँ।

10. प्रायोगिक के टीईई के लिए उत्तीर्ण अंक क्या हैं?

    उः उत्तीर्ण अंक 100 में से 35 हैं।

11. क्या प्रायोगिक के लिए पुनर्मूल्यांकन है?

    उः नहीं।

12. क्या मुझे टीईई के दौरान एक साक्षात्कार आयोजित करना है या एक हस्तक्षेप डिजाइन करना है?

    उ. नहीं, आपको केवल 1 प्रयोग संचालित करने के लिए कहा जाएगा।

13. क्या मौखिक परीक्षा केवल प्रयोग 1 के आधार पर होगा?

    उ. नहीं, बाहरी परीक्षक प्रयोग 1 और प्रयोग 2/3 (जो आपके अकादमिक परामर्शदाता द्वारा चुना गया था)पर आधारित प्रश्न पूछ सकता है।

10.0 परिशिष्ट

परिशिष्ट–1: प्रायोगिक नोटबुक के शीर्षक पृष्ठ के लिए प्रारूप

कार्यक्रम: बीए मनोविज्ञान (ऑनर्स)

सत्र (सेमिस्टर) 4

विषय: अनुप्रयुक्त सामाजिक मनोविज्ञान

विषय कोड: बीपीसीसी 110

शिक्षार्थी का नाम:

नामांकन संख्या:

पता:

फोन नंबर:

ईमेल:

अध्ययन केंद्र का नाम / कोड / पता:

क्षेत्रीय केंद्र:

दिनांक: शिक्षार्थी

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

परिशिष्ट 2: प्रमाणपत्र

प्रमाणपत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि सुश्री/श्री..

नामांकन संख्या ....

....

बीए मनोविज्ञान (ऑनर्स) ने बीपीसीसी1110: अनुप्रयुक्त सामाजिक मनोविज्ञान में प्रायोगिकी (2 क्रेडिट) का संचालन और सफलतापूर्वक पूरा किया है।

शिक्षार्थी के हस्ताक्षर

नामः

नामांकन संख्याः

अध्ययन केंद्र का नामः

क्षेत्रीय केंद्रः

स्थानः

दिनांकः

अकादमिक परामर्शदाता के हस्ताक्षर

नामः

पदनामः

स्थानः

दिनांकः

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

परिशिष्ट 3: पावती

पावती

सुश्री / श्री... नामांकन संख्या ....
बीए मनोविज्ञान (ऑनर्स) के .... ने बीपीसीसी110 के लिए प्रैक्टिकल नोटबुक: अनुप्रयुक्त सामाजिक मनोविज्ञान अध्ययन केन्द्र ....क्षेत्रीय केंद्र .... में जमा की है।

दिनांक:

हस्ताक्षर (स्टाम्प के साथ)
(समन्वयक, अध्ययन केंद्र)

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY